नवंबर -दिसंबर २०१९ / पृष्ठ ५२ / मूल्य ₹१०

# लोकराज्य

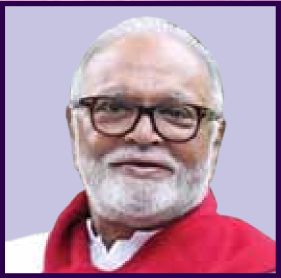

## एक ही लक्ष्य महाराष्ट्र धर्म!

# विट्ठल दर्शन

मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को शुभेच्छा देते हुए वारकरी दंपत्ति।

# अंतरंग

## यही वह समय... ६

अनेक ऐतिहासिक क्षणों के गवाह शिवाजी मैदान के इतिहास में २८ नवम्बर की शाम एक विशेष शाम के रूप में याद की जाएगी। हिन्दु हृदय सम्राट बालासाहब ठाकरे और उद्धव ठाकरे की सभाओं में प्रचंड जन समुदाय से भर जाने वाले शिवाजी मैदान में जब उद्धव ठाकरे ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली सम्पूर्ण मैदान रोमांचित हो उठा था ।

## ज्ञानसूर्य ३६

दुनिया में कुछ महान विभूतियों को उनके पुस्तकों से प्रेम के लिए भी जाना जाता है। मैकाले कहते थे 'पुस्तक पढने की मनाई कर कोई मुझे राजा बनाये तो मैं उस पद का त्याग कर दूंगा'। इसी परम्परा में भारतरत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर कहते थे 'पुस्तकों की वजह से जीवन को एक अर्थ मिलता है'।

## लोकनायक १०

सामाजिक कार्यों के माध्यम से शिवसेना को 'गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड' में पंहुचाने का काम उद्धव ठाकरे ने ही किया। उनके वजह से शिवसेना जिस प्रकार 'लोकमान्य' बनी उसी तरह अपने कार्यों की वजह से उद्धव ठाकरे भी 'लोकनायक' बन गए हैं।

## सतनाम ५०

गुरु नानक का उल्लेख सिख बंधु बहुत आदर से करते हैं और उन्हें सम्मान से श्री गुरु नानक देव जी के नाम से पुकारते हैं। गुरु नानक जी को समझने का प्रयास विद्वान और इतिहासकार नियमित रूप से करते आ रहे हैं। गुरु नानक का मार्ग सीधे परमेश्वर से मिलन का मार्ग है। गुरु नानक की ५५० वीं जयंती पर यह विशेष लेख।

## नये महाराष्ट्र का रोड मैप १७

राज्य के विकास में किसानों और सर्व सामान्य मेहनतकश जनता को केंद्र में रख स्वच्छ, पारदर्शक और निर्णयाभिमुख प्रशासन देने का संकल्प ही नए महाराष्ट्र का रोड मैप है।

## हमारे लोक प्रतिनिधि १८-३५

महाराष्ट्र विधानसभा के आम चुनाव २०१९ में २८८ विधानसभा क्षेत्रों से विजयी प्रत्याशियों का परिचय।

## कानूनविद ३९

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर एक अच्छे वकील थे। मुंबई उच्च न्यायालय में वकालत करने वाले डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की पहचान एक प्रसिद्द बैरिस्टर के रूप में थी। उन्होंने अपनी विद्वता और तर्क शक्ति के आधार पर उन्होंने अनेक लोगों के जीवन में आनंद की ज्योति जलायी और सुख दिलाया।


| | |
|---|---|
| यही वह समय... | ६ |
| हमारे मुख्यमंत्री | ९ |
| लोकनायक | १० |
| पहला निर्णय छत्रपति के रायगड के लिए... | १३ |
| हमारे नए मंत्री | १४ |
| नये महाराष्ट्र का रोड मैप | १७ |
| हमारे लोक प्रतिनिधि | १८-३५ |
| ज्ञानसूर्य | ३६ |
| कानूनविद् | ३९ |
| बाबासाहब के अस्थि स्थल | ४२ |
| `मूकनायक' की शताब्दी | ४६ |
| सतनाम | ४९ |

वर्ष २ । अंक ५-६ । नवंबर -दिसंबर २०१९

सूचना एवं जनसंपर्क महानिदेशालय,
महाराष्ट्र सरकार

**लोकराज्य**

**संपादन**

| | |
|---|---|
| मुख्य संपादक | ब्रिजेश सिंह |
| संपादक मंडळ | अजय अंबेकर |
| | सुरेश वांदिले |
| संपादक | अनिल आलूरकर |
| सहायक संपादक | कीर्ति पाण्डे |
| | मनिषा पिंगळे |
| उप संपादक | प्रवीण कुलकर्णी |
| | गजानन पाटिल |
| | राजाराम देवकर |

**वितरण व डिजाईन**

| | |
|---|---|
| वितरण | मंगेश वरकड |
| | अश्विनी पुजारी |
| सहायक | भारती वाघ |
| मुखपृष्ठ सज्जा | सीमा रनाळकर |
| | सुशिम कांबळे |
| मुद्रक | मे. मुद्रण प्रिंट एन पैक प्राइवेट लिमिटेड प्लाट नं. सी - २६० एमआईडीसी, टीटीसी इंडस्ट्रीयल एरिया, सविता केमिकल रोड, बिहाइंड गोकुल होटल, पवने, नवी मुंबई - ४००७०३ |

**टीम मुद्रण**

| | |
|---|---|
| संपादक | संजय राय |
| सहायक संपादक | संजय गुरव |
| साज सज्जा | जयश्री भागवत |

**पता** सूचना एवं जनसंपर्क महानिदेशालय,
महाराष्ट्र सरकार न्यू प्रशासन भवन, १७ वीं मंजिल, मंत्रालय
के सामने, हुतात्मा राजगुरु चौक, मुंबई - ४०००३२
**Email : lokrajya.dgipr@maharashtra.gov.in**

**वितरण - क्रेता**

क्रेता और वाद-विवाद निवारण - ९३७२२३०३२०
(सुबह १०.३० से ५.३० कार्यालयीन कामकाज दिवस)

**ई - लोकराज्य** http://dgipr.maharashtra.gov.in

**Follow us on www.twitter.com/MahaDGIPR**
**Like us on www.facebook.com/dgipr**
**Subscribe us on YouTube/ MaharashtraDGIPR**
**Visit us on www.mahanews.gov.in Blog/maharashtradgipr**

कृपया सूचना एंव जनसंनपर्क महानिदेशालय की वेवससाईट
http://dgipr.maharashtra.gov.in देखें.
महाराष्ट्र सरकार की एक निर्मिति

# जनता का एक भी पैसा बेकार नहीं जाने देंगे : मुख्यमंत्री

जनता ने सरकार पर जो विश्वास दिखाया है उसे सही सिद्ध करने के लिए तथा महाराष्ट्र को देश में अग्रसर बनाने के लिए विकास कार्य करते समय जनता का एक भी पैसा बेकार नहीं जाये अधिकारी इस बात का कठोरता से ध्यान रखें, उक्त निर्देश मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने दिए हैं।

शपथ ग्रहण करने के बाद मुख्यमंत्री ने प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ संसद साधते हुए कहा।

मुख्यमंत्री श्री. ठाकरे ने कहा कि जनता जो कर अदा करती है उसी से विकास कार्य होते हैं। इसलिए इस निधि का सही तरह से विनियोग करते हुए विकास कामों को गति देना आवश्यक है। सेवा भाव से काम करके ही हम जनता का विश्वास जीत सकते हैं। 'यह सरकार मेरी है' लोगों के मन में ऐसे विश्वास को जगाने का काम करना यह हम सबकी जवाबदारी है।

जनता ने विश्वास के साथ मुख्यमंत्री पद की जवाबदारी सौंपी है। राज्य को मुंबई में जन्मा हुआ पहला मुख्यमंत्री मिला है लेकिन हमें मुंबई सहित राज्य को भी देश में सबसे आगे ले जाना है के स्वप्न के साथ काम करना है। विकास कार्यों के लिए निधि देते समय इस बात का ध्यान देने की भी जरूरत है कि कर दाताओं की उसकी वजह से आय में भी वृद्धि हो। इसी के साथ -साथ किसानों और मेहनतकशों के जीवन में खुशी और आनंद आये उस हिसाब से हमें विकास कार्यों को प्राथमिकता देनी होगी।

जनसेवा के लिए पारदर्शी और स्वच्छ कामकाज की तरफ भी अधिकारियों को ध्यान देना होगा। सरकार और प्रशासन के प्रति जनता के मन में आदर और सम्मान की भावना निर्मित हो इसके लिए यह महत्वपूर्ण है। सर्वांगीण विकास को साधते समय कार्यों की गति और दिशा भी उतना ही महत्वपूर्ण पहलू है। इसलिए प्रशासन के महत्वपूर्ण अधिकारियों की जवाबदारी खूब महत्वपूर्ण है। अधिकारी अपनी जवाबदारियों का सही तरीके से निर्वाहन करेंगें तथा प्रगति के लक्ष्य को हांसिल करने में सरकार सफल होगी, इस बात का विश्वास मुख्यमंत्री ने अधिकारियों की इस बैठक में जताया।

# संयमी और समर्थ

**एकनाथ शिंदे**
**मा. मंत्री**

२८ नवंबर २०१९ को शिवाजी पार्क स्थित शिवतीर्थ पर प्रचंड जन समुदाय के समक्ष श्री. उद्धव ठाकरे ने जैसे ही मुख्यमंत्री पद की शपथ ली महाराष्ट्र में एक नए पर्व का शुभारंभ हो गया।

महाराष्ट्र देश का एक समर्थ और संपन्न राज्य है। इस राज्य को एक नयी ऊंचाई पर ले जाने के लिए मुख्यमंत्री श्री. उद्धव ठाकरे के संयमी और समर्थ नेतृत्व के तहत महाराष्ट्र तैयार है।

वर्तमान में महाराष्ट्र को विभिन्न समस्याओं ने घेर रखा है। विशेष रूप से बेमौसम की बारिश, अतिवृष्टी ने किसानों का बहुत बड़े पैमाने पर नुकसान किया है। पीड़ित किसानों को सही और बड़ी मदद देने का निर्णय मुख्यमंत्री ने अपने मंत्रिमंडल की पहली बैठक में किया है। छत्रपति शिवाजी महाराज के स्वराज्य की राजधानी रायगड किले के संवर्धन के लिए २० करोड़ की निधि मंजूर कर उन्होंने छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रति अपना श्रद्धापूर्वक अभिवादन किया है।

लोगों को यह सरकार 'अपनी सरकार' लगे इसके लिए मुख्यमंत्री ने प्रशासन के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि लोगों के हितों के और हक के निर्णय तुरंत प्रभाव से किये जाने चाहिए। जनता के हर एक पैसे का नियोजन काफी समझबूझ कर किया जाना चाहिए यह बात भी मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से स्पष्ट रूप से कही है।

श्री. ठाकरे के रूप में महाराष्ट्र को संयमी परन्तु दृढ़, मृदु परन्तु निश्चयी, प्रेम भाव रखने वाला तथा अपने कर्तव्य के लिए कठोर ऐसे गुणों से भरपूर नेतृत्व मिला है। ऐसे नेतृत्व के मार्गदर्शन में महाराष्ट्र नए तेज के साथ चमकेगा इस बात में कोई शंका नहीं है।

६ दिसंबर को महामानव डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का महापरिनिर्वाण दिन है। भारतरत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का नाम दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विचारकों व सामाजिक क्रांति करने वाले प्रमुख नेताओं में से एक है। बाबासाहब ने समाज के उपेक्षित लोगों को ना सिर्फ जीवन जीने की शक्ति दी अपितु उन्हें आत्म सम्मान भी दिलाया। इस आत्म सम्मान की वजह से उपेक्षित और वंचित वर्ग के लोगों का आत्मविश्वास बढ़ा, जीवन जीने के लिए नयी ऊर्जा और उत्स्फूर्ति भी मिली। डॉ. आंबेडकर द्वारा जो सामाजिक क्रांति की गयी वह अद्भुत और अद्वितीय है। इस क्रांति को सफल बनाने के लिए उन्हें निरंतर परिश्रम करना पड़ा। उन्होंने सम्पूर्ण उपेक्षित और वंचित समाज के सर्वांगीण उत्थान के हिमालय को उठाने का निर्धारण तथा निश्चय भी किया। अपनी प्रकांड बुद्धि और दूरदृष्टि के समन्वय से उन्होंने पूरे भारत में सामाजिक क्रांति का नया अध्याय लिखा।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में अपनी प्रारंभिक व विदेश में उच्च शिक्षा पूर्ण की। इस शिक्षा के बाद भी उनका ज्ञानयज्ञ अखंड रूप से जारी ही रहा। अर्थ नीति, समाज नीति, कामगार, क़ानून, जल संधारण, धर्मशास्त्र, संरक्षण ऐसे अनेकों विषयों की उन्हें जानकारी थी। किताबों से उनका प्यार अवर्णनीय है। अपने ही घर में उन्होंने एक अलग से पुस्तकालय बनाकर बहुत प्यार से किताबों का संग्रह किया था।

भारत का संविधान की रचना करते समय उन्होंने देश की एकता, अखंडता, एकात्मिकता और धमर्निरपेक्षता को लेकर जो विवेचन किया तथा उनके हिसाब से जिन बातों का उल्लेख किया गया वे अत्यंत महत्वपूर्ण और कालजयी साबित हुई हैं। इसकी वजह से भारत का संविधान दुनिया के सर्वश्रेष्ठ संविधानों में से एक माना जाता है। हमारे संविधान में जो आम आदमी को अधिकार दिए हैं उसकी शक्ति का प्रदर्शन समय समय पर मतपेटी के माध्यम से देश में देखने को मिलता है।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने हमारे समाज की सभी घटकों की महिलाओं के ऊपर सदियों से होने वाले अत्याचारों व अन्याय को दूर करने का प्रयास भी संविधान के माध्यम से किया और उनका दूरगामी असर नजर आता है। भारतीय महिलाओं की अस्मिता, न्याय और बराबरी का दर्जा दिलाने का डॉ. आंबेडकर का कार्य बेजोड़ है।

६ दिसंबर को डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का महापरिनिर्वाण हुआ। लेकिन उनके कार्य, विचार, उनके द्वारा दिखाई हुई दिशा, प्रेरणा, ऊर्जा, आत्म सम्मान की हुंकार यह चिरंतन रहने वाली है। इस महामानव के महापरिनिर्वाण दिन के अवसर पर 'लोकराज्य' परिवार की तरफ से उनको कृतज्ञतापूर्वक अभिवादन ! महापरिनिर्वाण दिन के अवसर पर 'लोकराज्य' में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर आधारित कुछ लेखों का समावेश भी किया गया है। यह अंक आप सभी को पसंद आएगा, यही आशा करता हूँ।

**एकनाथ शिंदे**
**( अतिथी संपादक )**

# यही वह समय...

**अनेक ऐतिहासिक क्षणों के गवाह शिवाजी मैदान के इतिहास में २८ नवम्बर की शाम एक विशेष शाम के रूप में याद की जाएगी। हिन्दू हृदय सम्राट बालासाहब ठाकरे और उद्धव ठाकरे की सभाओं में प्रचंड जन समुदाय से भर जाने वाले शिवाजी मैदान में जब उद्धव ठाकरे ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली सम्पूर्ण मैदान रोमांचित हो उठा ।**

शाम के ६ बजकर ४० मिनट हो गए, सुबह से जिस क्षण का इंतजार था वह क्षण नजऱों के सामने था। महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने जैसे ही 'मी' (मैं) शब्द का उच्चारण किया शिवाजी पार्क स्थित लाखों लोगों की नजरें श्री. उद्धव ठाकरे पर टिक गयी... छत्रपति शिवाजी महाराज को वंदन कर और अपने माता-पिता का स्मरण कर मैं उद्धव बालासाहब ठाकरे ईश्वर को साक्षी मानते हुए शपथ लेता हूँ कि... ऐसा बोलते ही शिवाजी पार्क उत्साह से भर गया। महाराष्ट्र को २९ वां मुख्यमंत्री मिला और मंच के सामने बैठी जनता के चेहरे पर भाव उभर कर आया कि 'यही वह समय' जिसके लिए हम शिवाजी मैदान में एकत्र हुए थे।

अनेक ऐतिहासिक क्षणों के गवाह शिवाजी मैदान के इतिहास में २८ नवम्बर की शाम एक विशेष शाम के रूप में याद की जाएगी। स्व. बालासाहब ठाकरे और उद्धव ठाकरे की सभाओं में प्रचंड जन समुदाय से भर जाने वाले शिवाजी मैदान में जब उद्धव ठाकरे ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली सम्पूर्ण मैदान रोमांचित हो गया। यहाँ उपस्थित हर एक व्यक्ति के चेहरे पर कृतकृत्य हो जाने वाला भाव दिखाई देता था। राज्य के दूर दराज के क्षेत्रों से आये किसानों, मेहनतकशों, युवाओं के चेहरों पर एक अभिमान और गौरव का भाव चमकता हुआ दिखाई दे रहा था। यह भाव था हमारा नेता राज्य का प्रमुख बन गया।

शाम को शपथ होने वाली है यह बात सभी को

**मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते हुए श्री. उद्धव ठाकरे।**

पता थी लेकिन सुबह से ही मैदान में लोगों की कतार लगनी शुरु हो गयी थी। इस समारोह में शामिल होने के लिए लोग छोटे -छोटे गावों और बस्तियों से जो साधन मिला उसमें बैठकर आये। कुछ लोग तो यंहा आने के लिए रात में सो भी नहीं सके थे, लेकिन उनके चेहरे एवं आँखों में एक आनंद सा दिखाई देता था। इस शपथ ग्रहण समारोह की विशेषता यह थी कि इसमें अनेक राज्यों के विविध स्तर के लोगों ने हिस्सा लिया। किसान, मजदूर, मेहनतकश, युवक, महिलाओं के साथ-साथ हिंदी व मराठी सिनेमा के अनेक कलाकार भी यंहा उपस्थित थे। सांगली, कोल्हापुर, सातारा जिले के वारकरी सम्प्रदाय से जुड़े बहुत से लोग भी यंहा उपस्थित थे।

शपथ समारोह शाम को होने वाला था लेकिन सुबह से ही शिवाजी पार्क में धीरे -धीरे भीड़ बढऩे लगी थी। राज्य ही नहीं देश के अनेक समाचार पत्रों के पत्रकार, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रतिनिधि समारोह के हर क्षण व घटनाक्रम को कैमरे कैद करने के लिए नजरें लगाए हुए थे। कुर्सियों के लगाने से लेकर, मंच की सजावट तथा शपथ ग्रहण समारोह में प्रत्यक्ष रूप से कौन -कौन आएगा इस बात को लेकर बहुत उत्सुकता बनी हुई थी। मंच से नंदेश उमप का कार्यक्रम शुरु था। पोवाडों और समर गीतों के माध्यम से पूरे माहौल को और अधिक उत्साहित व प्रफुल्लित किया जा रहा था। प्रतीक्षा, उत्सुकता, थोडा सा तनाव और गंभीरता सभी के चेहरों पर दिखाई दे रही थी।

पांच दशकों से महाराष्ट्र की राजनीति में अपनी एक विशेष पहचान बनाने वाले ठाकरे घराने का पहला व्यक्ति आज राज्य के प्रमुख के रूप में शपथ लेने जा रहा है। इस बात की मीडिया में भी बड़ी उत्सुकता थी। राज्य के बहुत से मराठी चैनल इस समारोह को दिखाने के लिए शिवाजी मैदान से लाइव शो कर रहे थे जबकि हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के टेलीविजन विशेष कार्यक्रम दिखा रहे थे। महाराष्ट्र की इस नयी सरकार के शपथ समारोह की खबरों के लिए मलयालम, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ जैसी विविध भाषाओं के पत्रकार भी इस अवसर पर शिवाजी मैदान पर उपस्थित थे। विशेष यह था कि अंतरराष्ट्रीय स्तर के मीडिया में भी इस कार्यक्रम को लेकर उत्सुकता बनी हुई थी। महाराष्ट्र जैसा देश के विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी राज्य का प्रमुख पद एक संयमी और दृढ़ विचारों वाले नेता के पास जा रहा है इसको लेकर सबको उत्सुकता थी। ६ बजकर ३६ मिनट पर श्री. ठाकरे मंच पर आये और मंच के सामने बैठे लोगों में उत्साह का वातावरण फ़ैल गया। केशरी रंग का कुर्ता और चेहरे पर आत्म विश्वास, आँखों में मंच के सामने बैठी हुई जनता के प्रति आभार का भाव था। शपथ लेने के बाद उन्होंने उपस्थित जन समुदाय का अभिवादन किया और संदेश दिया कि यह राज्य आपका है और आपके लिए ही चलाया जाएगा। यह सरकार छत्रपति शिवाजी महाराज के जन कल्याण के विचारों के आधार पर ही चलायी जाएगी ऐसा उन्होंने शपथ ग्रहण से पूर्व ही छत्रपति का स्मरण कर जनता को आश्वासित कर दिया।

श्री. ठाकरे के शपथ लेने के बाद, सर्वश्री एकनाथ शिंदे, सुभाष देसाई, जयंत पाटिल, छगन भुजबल, बालासाहब थोरात और नितिन राउत ने भी शपथ ली। शपथ समारोह में देश और राज्य स्तरीय अनेक नेता उपस्थित थे।

**प्रवीण कुलकर्णी**

# हमारे मुख्यमंत्री

महाराष्ट्र के २९ वें मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे, शिवसेना प्रमुख भी हैं। पिछले कई दशकों से मराठी माणूस, किसान और मेहनतकश जनता के कल्याण के लिए कार्यरत श्री. ठाकरे को उनके पिता शिवसेना के संस्थापक हिन्दू हृदय सम्राट बालासाहब ठाकरे, मां स्व. मीनाताई ठाकरे और दादा प्रबोधनकार केशव सीताराम ठाकरे की समृद्ध विरासत हांसिल हुई है।

शिवसेना प्रमुख श्री. बालासाहब ठाकरे द्वारा शुरु किया गया शिवसेना का मुखपत्र दैनिक सामना के संचालन में संपादक पद की जवाबदारी भी श्री. ठाकरे ने संभाली है।

२७ जुलाई १९६० को मुंबई में जन्में श्री. उद्धव ठाकरे ने जे.जे. स्कूल ऑफ़ आर्ट्स से स्नातक की डिग्री हांसिल की है। फोटोग्राफी पर उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। एक अच्छे लेखक और व्यावसायिक चित्रकार श्री. ठाकरे की कलाकृतियों को समय -समय पर प्रसिद्ध मासिक पत्रिकाओं ने सराहा है। उनके द्वारा लगायी गयी छायाचित्र प्रदर्शनियों में उनके अंदर छुपे एक अंतरराष्ट्रीय दर्जे के छायाचित्रकार को कला प्रेमियों ने देखा है।

## राजनीतिक क्रिया कलाप

श्री. उद्धव ठाकरे के राजनीतिक जीवन की शुरुवात उनके छात्र जीवन से ही शुरु हो गयी थी। शिवसेना के माध्यम से वे सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय रहे। साल २००२ के मुंबई महानगरपालिका चुनाओं की जवाबदारी श्री. ठाकरे को मिली और उन्होंने फिर से मुंबई महानगरपालिका पर पार्टी की सत्ता को काबिज करा इस जवाबदारी को सफलता पूर्वक निभाया। इस चुनाव में उनकी राजनीतिक क्षमता को पूरे प्रदेश ने देखा। साल २००३ में पार्टी ने उन्हें कार्याध्यक्ष पद की जवाबदारी दी। और साल २००४ में शिवसेना प्रमुख बालासाहब ठाकरे ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी भी घोषित कर दिया।

## व्यक्तिगत जीवन

श्री. उद्धव ठाकरे का विवाह सौ. रश्मी से हुआ। उनके दो पुत्र आदित्य और तेजस हैं। आदित्य ठाकरे अपने दादा और पिता की राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं। वे वर्तमान में वरळी विधानसभा क्षेत्र से विधायक चुनकर आये हैं तथा युवा सेना के अध्यक्ष भी हैं।

## कलात्मक पहलु

श्री. उद्धव ठाकरे की साल २०१० में प्रकाशित पुस्तक 'महाराष्ट्र देशा' में महाराष्ट्र की भौगोलिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों के अलौकिक सौंदर्य का विहंगम छायाचित्रण है। महाराष्ट्र की समृद्ध संस्कृति का प्रतीक 'पंढरपुर की वारी' और ग्रामीण महाराष्ट्र का यथार्थ चित्रण ने साल २०११ में प्रकाशित हुई उनकी पुस्तक 'पहावा विट्ठल' देश ही नहीं दुनिया को भी मोहित कर लिया था। उन्होंने अपने छायाचित्रों की प्रदर्शनी के माध्यम से जो पैसा प्राप्त किया वह अकालग्रस्त क्षेत्रों के किसानों व वन्य जीवों के संरक्षण के लिए निधि के रुप में दे दिया।

## योगदान

शिवसेना के कार्याध्यक्ष का पद स्वीकारने के बाद से शिवसेना को अधिक सर्व समावेशक बनाने के लिए उसे आधुनिक रूप देने की कोशिश श्री. उद्धव ठाकरे ने की। युवाओं ,कामगारों और किसानों की समस्याओं के लिए उनके द्वारा राज्य भर में चलाये गए आन्दोलनों को सफलताएं मिली। ■ ८० फीसदी सामाज नीति  तथा २० फीसदी राजनीति की नीति के तहत कार्य करने के शिवसेना के सामाजिक कार्यों का पंजीयन गिनीज बुक ने भी किया है। ■ श्री. ठाकरे के नेतृत्व में शिवसेना ने मलेरिया की जांच और उपचार केंद्र शुरु कर जरुरत मंदों को औषधि भी उपलब्ध करा रही है।

■ विविध रक्तदान महाशिविरों के माध्यम से नये -नए सामाजिक कार्यों की शुरुवात की। ■ २००२ के मुंबई महानगरपालिका के चुनाव में प्रचार प्रमुख की जवाबदारी निभाई और विजय के शिल्पकार बने। इसके बाद पूरे महाराष्ट्र में पार्टी का विस्तार किया तथा लोकसभा और विधान सभा के चुनावों में शिवसेना को सफलता दिलायी। ■ पिछले पांच सालों तक शिवसेना केंद्र व राज्य की सरकारों में एक प्रमुख सहयोगी दल के रूप में शामिल थी। ■ राज्य की विभिन्न स्थानीय निकाय संस्थाओं में पार्टी को भारी सफलता हांसिल हुई है। ■ श्री. उद्धव ठाकरे ने साल २००७ में सूखाग्रस्त विदर्भ क्षेत्र का दौरा किया और किसानों की कर्जमाफी की योजना सफलता पूर्वक शुरु करवायी। ■ श्री. उद्धव ठाकरे ने किसानों के कल्याण को ध्यान में रख अपनी पार्टी का विस्तार किया और राज्य ने भी उनका नेतृत्व स्वीकार किया। ■ छायाचित्रकार और संवेदनशील लेखक श्री. उद्धव ठाकरे ने अपनी पार्टी की राजनीति में महत्वपूर्ण बदलाव किया और पार्टी को आज का सुसंगठित स्वरूप प्रदान किया। ■ महाराष्ट्र को विभिन्न क्षेत्रों में आगे ले जाने वाला नेतृत्व श्री. उद्धव ठाकरे के रुप में प्रदेश को मिला है। ■■

# लोकनायक

मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद जन समुदाय का अभिवादन करते हुए श्री. उद्धव ठाकरे।

**सामाजिक कार्यों के माध्यम से शिवसेना को 'गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड' में पंहुचाने का काम उद्धव ठाकरे ने ही किया। उनकी वजह से हिन्दू हृद सम्राट शिवसेना प्रमुख बाळासाहेब ठाकरे जिस प्रकार 'लोकमान्य' बने उसी तरह अपने कार्यों की वजह से उद्धव ठाकरे भी 'लोकनायक' बन गए हैं।**

**हर्षल प्रधान**

शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे के बारे में उनकी पार्टी के बाहर लोगों में बहुत से अलग -अलग मत हैं। शिवसेना की विरासत को वे सही तरह से चला पायेंगें क्या? इस प्रकार का सवाल भी पूर्व में अनेकों बार उपस्थित किया गया था। बालासाहब का आक्रामक स्वभाव, आक्रामक भाषण के द्वारा अपने विरोधकों को चारों खाने चित कर डालने की उनकी शैली उद्धव ठाकरे में नहीं है इस विचारधारा को मानने वालों का एक वर्ग है। स्वयं उद्धव ठाकरे भी इस बात को मानते हैं कि वे शिवसेना प्रमुख जैसा भाषण नहीं कर सकते हैं। बालासाहब जैसा व्यक्तित्व सदियों में एकाधा ही जन्मता है इसलिए उनके जैसा कोई दूसरा नहीं हो सकता यह बात भी उद्धव ठाकरे बहुत ही स्पष्ट रूप से कहते हैं। फिर उद्धव ठाकरे में ऐसा क्या है जो सभी शिव सैनिक उन्हें अपना नेता मानते हैं? शिवसेना प्रमुख जैसा करिश्मा नहीं होने के बावजूद सभी को उन पर विश्वास क्यों है ?सौम्य व्यक्तित्व होने के बावजूद उनके प्रति शिवसेना में आदर क्यों है ? ऐसे अनेक प्रश्नों के उत्तर बहुत आसान हैं।

## ठोस भूमिका

उद्धव ठाकरे, सौम्य हैं फिर भी वे अपनी भूमिका पर ठोस रहने वाले हैं। जो वचन वे किसी को देते हैं उसका निर्वाह करते हैं। वे नेताओं को कड़ी बनाने पर विश्वास नहीं करते हैं और सीधे कार्यकर्ताओं व

**मुख्यमंत्री श्री. उद्धव ठाकरे, सौ. पत्नी रश्मी ठाकरे और विधायक श्री. आदित्य ठाकरे व श्री. तेजस ठाकरे ।**

पदाधिकारियों से संवाद करते हैं। झूठ और चमचागिरी से उद्धव ठाकरे को बहुत चिढ है और वे आम आदमी के काम करने को अधिक प्रधानता देते हैं। सत्ता महज साध्य नहीं अपितु यह लोगों के काम करने का एक माध्यम है ऐसा उद्धव ठाकरे का मत है। इसलिए बालासाहब की तालीम में प्रशिक्षित हुए शिव सैनिकों को वे अपने जैसे लगते हैं। राजनीति से ज्यादा सामाजिक कार्यों के प्रति रूचि रखने वाला उनका व्यक्तित्व है।

मुंबई महानगरपालिका की सत्ता उनके नेतृत्व में मिलने के बाद बारिश के मौसम में जब मुंबई की सडकों पर गड्ढों का मुद्दा चर्चा में आया तो वे स्वयं गड्ढे बुझाने के लिए सड़क पर उतर आये। पीने के पानी का सवाल हो या लोगों के स्वास्थ्य का वे इन सवालों का समाधान करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। इस बार भी जब बारिश में सडकों पर गड्ढे पड़े तो वे रात को तीन -तीन बजे तक गड्ढे बुझाने के कार्यों पर ध्यान देते रहे। मलेरिया का प्रकोप बढा तो उन्होंने महानगरपालिका के अधिकारियों की बैठक ली। स्वयं सभी चिकित्सालयों का दौरा किया और वंहा उपचार की सुविधाओं का निरीक्षण किया। शिवसेना की तरफ से मलेरिया के उपचार केंद्र शुरु किये। शिवसेना की तरफ से ३० लाख रुपये की दवाईयां वितरित की। मुंबई के उपनगरीय क्षेत्रों की स्वास्थ्य सेवा को मजबूत बनाने के लिए योजना बनायी। इस योजना की वजह से आने वाले समय में बोरीवली में भगवती, कांदिवली में शताब्दी, विले पार्ले में कूपर तथा जोगेश्वरी में चिकित्सालय खुले हैं और खुलेंगें। ये चिकित्सालय उप नगरों में रहने वाले ६३ लाख लोगों की जरूरत हैं।

## सामाजिक कार्यों के प्रति दृढ .निष्ठा

लोगों के लिए व विकास के लिए सत्ता चलाने का स्वप्न देखने वाले तथा उस स्वप्न को प्रत्यक्ष रूप से साकार करने वाले शिवसेना प्रक्ष प्रमुख उद्धव ठाकरे का नेतृत्व एक निराला ही बोला जाएगा। २५ अप्रैल २०१० को एनएसई संकुल में 'रक्तदान का महायज्ञ' आयोजित करने वाले उद्धव ठाकरे ने एक अलौकिक समाज कार्य कर शिव धनुष उठाया था। देखते -देखते ही इस महायज्ञ के माध्यम से शिवसेना का नाम 'गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड' में दर्ज हो गया। शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे के प्रखर सामाजिक लगाव की वजह से देखते ही देखते यह असंभव लगने वाला विश्व रिकार्ड का सामाजिक कार्य भी संभव हो गया। शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे के सामाजिक कार्यों के प्रति दृढ .निष्ठा व विचारों की वजह से 'रक्तदान का महायज्ञ' पूरा हो सका।

आज के राजनीतिक दौर में मीडिया के माध्यम से आसानी से बड़ा होना संभव होते हुए भी उद्धव ठाकरे ने कभी उस राह पर चलने की कोशिश ही नहीं की। ठाकरे घराने की परंपरा सामाजिक कार्य और शिवसेना प्रमुख बालासाहब के सामाजिक लगाव की विरासत को आगे बढाते हुए उद्धव ठाकरे ने राजनीति में प्रवेश किया और लोगों के काम करके उनके मन को जीतने का मार्ग ही उन्होंने अपनाया। यह राह आसान नहीं है। इस राह में बहुत सी अड़चन हैं इसमें श्रेय से ज्यादा आरोप और टीका में समय ज्यादा व्यर्थ होता है। शिवसेना के कामकाज को जब से उद्धव ठाकरे ने देखना शुरु किया तब से उन्होंने परिस्थितियों को ध्यान में रखकर निचले स्तर से पार्टी का संगठन मजबूत करने पर ध्यान दिया। गट प्रमुखों की नियुक्ति से उन्होंने ध्यान देना शुरु किया। इसके बाद उप शाखा प्रमुख, शाखा प्रमुख की नियुक्तियां शुरु हुई उस समय प्रस्थापितों को अपने विभाग में किछ बदलाव नहीं करने देने पर ध्यान रख उन्होंने शुरुवात की।

आश्रय देने वाली राजनीति की तरह उद्धव ठाकरे संगठन को बनाते समय ध्यान देते थे। नगरसेवक से लेकर विधायक पद की उम्मीदवारी संगठन यानी शाखा प्रमुख से लेकर विभाग प्रमुख के माध्यमों से ही निधार्रित की जाएगी ऐसी भूमिका तय करके उन्होंने संगठन और पदाधिकारियों को महत्व दिया। युति सरकार के कार्यकाल में ही उद्धव ने अपने पार्टी संगठन को पूरी तरह से तैयार कर लिया था। शिवसेना प्रमुख और शिव सैनिक बड़े होते हैं यह बात उद्धव ठाकरे ने अपने कार्यो के माध्यम से दिखा दी थी।

## महाराष्ट्र भ्रमण

उद्धव ठाकरे के नेतृत्व में शिवसेना को मुंबई और ठाणे महानगरपालिका में विजय मिली। इस विजय ने उनकी नेतृत्व क्षमता पर मुहर लगा दी। किसी भी टीका -टिप्पणी पर ध्यान ना देते हुए उद्धव ठाकरे ने पार्टी के संगठन को मजबूत करने और राज्य की जनता की समस्याओं पर अपना ध्यान केंद्रित कर अपना काम जारी रखा। चुनाव के दौरान उन्होंने पूरे महाराष्ट्र का दौरा किया। किसानों की आत्महत्या से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों के अनेकों मुद्दों को वे लेकर चले। इसी दौरान किसानों की मदद करने के लिए उन्होंने अपने छायाचित्रों की प्रदर्शनी और बिक्री कर उससे उत्पन्न हुए १० लाख रुपये किसानों की मदद के लिए दिए और एक अलग तरह की राजनीति इस माध्यम से उन्होंने दिखाई। उद्धव ठाकरे आज शिवसैनिकों के लिए अपने तथा सामान्य लोगों के लोकनायक बन गए हैं। और यह सब उनके संवेदनशील स्वभाव और संयमी राजनीतिक नीति के की वजह से हुआ है।

# पहला निर्णय छत्रपति के रायगड के लिए...

## रायगड संवर्धन के लिए २० करोड़ रूपये

श्री. उद्धव ठाकरे ने मुख्यमंत्री पद का कारभार संभालते ही जो पहला निर्णय किया वह रायगड का संवर्धन और परिसर के विकास के लिए २० करोड़ रुपये की निधि वितरण करने का आदेश का था। रायगड किले के विकास के लिए ६०६ करोड़ की योजना बनकर तैयार है। इस योजना के लिए निधि देने का प्रस्ताव प्रलंबित पड़ा था। श्री. ठाकरे ने रायगड किले के विकास की फ़ाइल मंगायी और विशेष बात यह कि उन्होंने निधि वितरण के प्रस्ताव को मान्यता देते हुए फ़ाइल पर पहला हस्ताक्षर किया। छत्रपति शिवाजी महाराज के गड -किले राज्य की समृद्ध विरासत हैं इसलिए इनका जतन करना तथा वे आगे आने वाली पीढी के लिए प्रेरणादायी बने इसलिए उनका संवर्धन करना आवश्यक है। इसलिए राज्य सरकार इसके लिए सभी प्रकार से सहयोग करेगी यह बात मुख्यमंत्री श्रा ठाकरे ने कही।

## आरे कारशेड के काम पर रोक; पूर्ण जानकारी के बाद निर्णय

'राज्य में मूलभूत सुविधाओं के विकास के लिए पूरा ध्यान दिया जाएगा। साथ ही साथ इस बात का भी ध्यान दिया जाएगा कि पर्यावरण की रक्षा हो। राज्य सरकार का किसी काम को लेकर कोई विरोध नहीं है, मात्र इस बात का ध्यान रहेगा कि वैभव खोकर कोई विकास काम नहीं हो। मुंबई में मेट्रो परियोजना का काम तेज गति से करते समय प्रकृति का नुकसान नहीं हो इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इसी वजह से आरे में बनाये जाने वाले कारशेड के कार्य को स्थगित किया गया है। इस मामले में पूरी जानकारी लेने के बाद अगला निर्णय किया जाएगा।

यह आपकी सरकार है। जनता का पैसा विविध योजनाओं पर खर्च किया जाता है। इस वजह से योजनाओं पर खर्च किया जाने वाला पैसा करदाताओं का पैसा है यह ध्यान रखते हुए काम करने से पैसों में कुछ गड़बड़ नहीं होगी। मुख्यमंत्री ने इस बात के निर्देश सचिव स्तर के अधिकारियों को दिए। मैं मुंबई में जन्मा राज्य का पहला मुख्यमंत्री हूँ, इसलिए मुंबई के लिए क्या कर सकता हूँ इस पर विचार किया जा रहा है। इसके अलावा राज्य के अन्य शहरों में क्या -क्या किया जा सकता है इस बारे में भी विचार किया जा रहा है। किसानों को लेकर शीघ्र ही महत्वपूर्ण निर्णय किया जाएगा। मुख्यमंत्री श्री. ठाकरे ने मंत्रालय में पत्रकारों से संवाद करते समय कहा।

# हमारे नए मंत्री

## श्री. एकनाथ संभाजी शिंदे

**जन्म** : ६ मार्च १९६४
**जन्म स्थान** : दरेगांव, तालुका -जावळी, जिला -सातारा
**शिक्षा** : एच एस सी
**वैवाहिक जीवन** : विवाहित ,पत्नी -श्रीमती लता
**संतान** : एक ( बेटा )
**व्यवसाय** : उद्योग / सामाजिक कार्य

**पार्टी** : शिवसेना
**विधानसभा क्षेत्र**: १४७ कोपरी -पाचपाखड़ी, जिला - ठाणे
**अन्य जानकारी**: संपूर्ण ठाणे शहर व जिले में सामाजिक कार्यों का जाल निर्माण किया, ठाणे शहर में ओपन आर्ट गैलेरी, सचिन तेंदुलकर मिनी स्टेडियम, इटरनिटी सुविधा भूखंड पर बालासाहब ठाकरे का स्मारक, शहीद हेमंत करकरे क्रीड़ा संकुल, जॉगिंग पार्क, सेन्ट्रल लायब्रेरी शुरु की। आदिवासी भाग मोखाडा, तलासरी, जव्हार में आश्रम शाळा व आरोग्य केंद्र में पौष्टिक आहार व स्वास्थ्य जांच के शिविर आयोजित कर मरीजों को निशुल्क औषधियों का वितरण किया। पालघर, बोइसर व सफाले क्षेत्र में शिवसेना की तरफ से एसएससी के विद्यार्थियों के लिए व्याख्यान मालाओं का आयोजन, गरीब विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्रियों का वितरण, बाढ.पीड़ितों को जीवनावश्यक वस्तुओं का वितरण, वृक्षारोपण, आरोग्य जांच शिविरों का आयोजन, अध्यक्ष ठाणे जिला बैडमिंटन असोसिएशन, उपाध्यक्ष महाराष्ट्र राज्य एथलेटिक्स संगठन, ठाणे शहर के विकास और सर्वांगीण विकास के लिए विशेष योगदान, शिवसेना शाखा प्रमुख, वागले इस्टेट, किशन नगर -२, शिवसेना ठाणे जिला प्रमुख, पार्टी के सभी आन्दोलनों में सक्रियता के साथ भाग लिया, ठाणे महानगरपालिका के लिए दो बार नगरसेवक, तीन साल तक स्थायी समिति सदस्य, चार साल तक सभागृह नेता, २००४ से अब तक विधायक। दिसंबर २०१४ से ५ दिसंबर २०१४ तक महाराष्ट्र विधानसभा में विरोधी दल का नेता, दिसंबर २०१४ से अक्टूबर २०१९ तक सार्वजनिक निर्माण ( सार्वजनिक उपक्रम ) विभाग का मंत्री। अक्टूबर २०१९ में फिर से विधायक चुने गये।

**(सन्दर्भ: १३ वीं महाराष्ट्र विधानसभा सदस्यों का संक्षिप्त जीवन परिचय)**

## श्री. सुभाष राजाराम देसाई

**जन्म** : १२ जुलाई १९४२
**जन्म स्थान** : मालगुंड , तालुका -जिला - रत्नागिरी
**शिक्षा** : एस एस सी, पत्रकारिता की डिग्री
**भाषा ज्ञान** : मराठी, हिंदी ,अंग्रेजी व गुजराती
**वैवाहिक जीवन** : विवाहित, पत्नी -श्रीमती पुष्पा
**संतान** : तीन (बेटे)

**व्यवसाय** : उद्योग
**पार्टी** : शिवसेना
**विधानसभा क्षेत्र**: महाराष्ट्र विधानसभा सदस्यों द्वारा निर्वाचित
**अन्य जानकारी** : १९८२ में 'प्रबोधन गोरेगांव' विश्वस्त संस्था स्थापित कर संस्थापक बने, १९७३ में अंतं विद्यालय क्रीड़ा महोत्सव व अंतर महाविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया, १९७३ में गोरेगांव में शिवसेना की एम्ब्युलेंस सेवा शुरु की, १९७७ में मुंबई उपनगर मराठी साहित्य सम्मलेन के प्रमुख कार्यवाह बने, १९८९ में प्रबोधन प्रकाशन के ट्रस्टी बने, प्रकाशक-दैनिक सामना, साप्ताहिक मार्मिक व दोपहर का सामना, १९९१ में प्रबोधन क्रीड़ा भवन बनाया,१९९२ में खेड -जिला -रत्नागिरी ,कोंकण रेल्वे परिषद के मुख्य संयोजक बने। १९९९ में प्रबोधन जॉगर्स पार्क का निर्माण किया, २००० में मुंबई फेस्टिवल व हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत उत्सव के मुख्य संयोजक बने, २००१ में मुख्य संयोजक के रूप में हर्बल वर्ल्ड औषधि वनस्पति प्रदर्शनी व चर्चा सत्र का आयोजन किया, २००२ में उल्लेखनीय समाज कार्यों के लिए संभाजी प्रतिष्ठान की तरफ से धर्मवीर पुरस्कार प्राप्त हुआ, २००३ में सहारा हवाई अड्डे के सामने अश्वारूढ. छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा स्थापित की, २००४ में प्रबोधन रक्त बैंक की शुरुवात की,१९६६ में शिवसेना की स्थापना के समय से ही शिव सैनिक के रूप में काम किया,१९८४ में शिवसेना नेता,१९८५ में प्रमुख संयोजक के रूप में शिवसेना का दूसरा महाराष्ट्र स्तरीय अधिवेशन ,महाड में आयोजित किया,१९८६ से ९० तक शिवसेना जलगांव जिला संपर्क प्रमुख,१९८९ से महासचिव -शिवसेना,१९९५ में शेष महाराष्ट्र वैधानिक विकास मंडल अध्यक्ष, १९९० में विधायक चुने गए, २००४ से लेकर २०१४ तक महाराष्ट्र विधानसभा के विधायक रहे, २०१५ –१६ में महाराष्ट्र विधान परिषद के सदस्य। ५ दिसंबर २०१४ से अक्टूबर २०१९ तक उद्योग मंत्री, जुलाई २०१६ में फिर से विधान परिषद सदस्य चुने गए।

**(सन्दर्भ: महाराष्ट्र विधान परिषद सदस्यों का संक्षिप्त जीवन परिचय)**

## श्री. जयंत राजाराम पाटिल

**जन्म** : १६ फरवरी १९६२
**जन्म स्थान** : सांगली
**शिक्षा** : बी.ई. (सिविल )
**भाषा ज्ञान** : मराठी, हिंदी, अंग्रेजी
**वैवाहिक जीवन** : विवाहित, पत्नी -श्रीमती शैलजा
**संतान** : दो (बेटे)
**व्यवसाय** : कृषि
**पार्टी** : राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी
**विधानसभा क्षेत्र** : २८३ ,इस्लामपुर ,जिला -सांगली

**अन्य जानकारा:** चेयरमैन -राजाराम बापू सहकारी शुगर कारखाना लि., उपाध्यक्ष महाराष्ट्र प्रदेश युवक कांग्रेस, चेयरमैन -कासेगांव शिक्षण संस्था, चेयरमैन -डेक्क्न शुगर टेक्नोलॉजिस्ट असोसिएशन, अध्यक्ष -महाराष्ट्र राज्य शुगर कारखाना संघ, संचालक- वसंत दादा शुगर इंस्टीट्यूट -पुणे, सदस्य -अखिल भारतीय शुगर संघ, संचालक -महाराष्ट्र राज्य सहकारी बैंक, पत संस्था, सहकारी सूत गिरणी, सहकारी ग्राहक भंडार, कृषि पदवीधर संघ, कुक्कुट पालन सहकारी सोसायटी आदि संस्थांए स्थापित कर लोगों का विकास करने के लिए अथक प्रयास किये। सदस्य -कार्यकारी मंडल शिवाजी विश्व विद्यालय, सदस्य -सांगली जिला व्यसन मुक्ति समिति व राजाराम बापू ज्ञान प्रबोधिनी, काउन्सिल मेंबर - इंजीनियरिंग एन्ड पॉलिटेक्निक कॉलेज, राजाराम नगर, सभी संस्थाओं का कामकाज संगणकीकरण करने की दिशा में प्रयासरत।

१९९९ से राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी का काम शुरु किया। १९९० से ९५, १९९५ से ९९ ,१९९९ से २००४ ,२००४ से 2009 ,२००९ से २०१४ व २०१४ से २०१९ आज तक महाराष्ट्र विधान सभा में विधायक के रूप में चुने गए। नवम्बर १९९९ से दिसंबर २००८ तक वित्त व नियोजन विभाग के मंत्री। दिसंबर २००८ में कुछ अवधि के लिए गृहमंत्री ,नवम्बर २००९ से अक्टूबर २०१४ तक ग्राम विकास मंत्री ,प्रदेशाध्यक्ष राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी, अक्तूबर २०१९ में फिर से विधायक चुने गए ।

**(सन्दर्भ: १३ वीं महाराष्ट्र विधानसभा सदस्यों का संक्षिप्त जीवन परिचय)**

## श्री. छगन चंद्रकांत भुजबल

**जन्म** : १५ अक्टूबर १९४७
**जन्म स्थान** : नाशिक
**शिक्षा** : एल. एम. ई. (आई )
**भाषा ज्ञान** : मराठी, हिंदी, अंग्रेजी
**वैवाहिक जीवन** : विवाहित, पत्नी -श्रीमती मीना
**संतान** : एक (बेटा)
**व्यवसाय** : कृषि
**पार्टी** : राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी

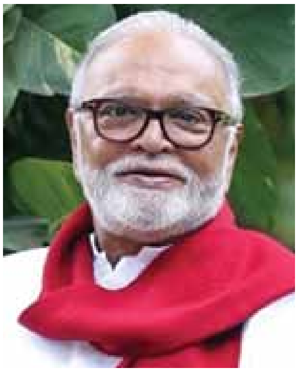

**विधानसभा क्षेत्र** : ११९, येवला, जिला -नाशिक

**अन्य जानकारी :** संस्थापक अध्यक्ष, मुंबई एज्युकेशनल ट्रस्ट -बांद्रा, पूर्व ट्रस्टी -वी जे टी आई -मुंबई,संस्थापक -महात्मा फुले समता परिषद - इस संस्था के माध्यम से पिछड़े वर्ग के लोगों को उनका हक दिलाने के प्रयास किये तथा महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहब आंबेडकर व शाहू महाराज के विचारों व आदर्शों का प्रचार -प्रसार किया, पूर्व ट्रस्टी - मुंबई पोर्ट ट्रस्ट,१९८५ में 'दैवत' और १९९० में 'नवरा -बायको' नामक मराठी फिल्मों का निर्माण,१९७३ में नगरसेवक मुंबई महानगरपलिका तथा १९७३ से १९८४ तक मनपा में विरोधी पक्ष के नेता रहे। १९८५ व १९९१ में मुंबई के महापौर बने,१९९१ में ऑल इण्डिया काउंसिल ऑफ़ मेयर्स के अध्यक्ष बने,१९९१ तक शिवसेना में रहे उसके बाद कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए, १९९९ से राष्ट्रवादी कॉंग्रेस पार्टी के संस्थापक सदस्य बने। जून १९९९ से नवम्बर १९९९ तक राष्ट्रवादी कांग्रेस के पहले प्रदेशाध्यक्ष रहे। १९८५ से ९०, १९९० से ९५, २००४ से २००९, २००९ से १४, २०१४ से २०१९ तक महाराष्ट्र विधानसभा के विधायक निर्वाचित होते रहे। १९९६ से २००२ तथा २००२ से २००४ तक महाराष्ट्र विधान परिषद के सदस्य चुने गए, दिसंबर १९९१ से मार्च १९९३ तक राजस्व मंत्री, मार्च १९९३ से मार्च १९९५ तक गृह निर्माण व गंदी बस्ती सुधार, घर सुधार तथा पुनर्विकास विभाग के मंत्री,१९९६ से ९९ तक महाराष्ट्र विधान परिषद में विरोधी दल के नेता, अक्टूबर १९९९ से जनवरी २००३ तक उप मुख्यमंत्री,गृह व पर्यटन मंत्री, नवम्बर २००४ से अक्टूबर २००९ तक सार्वजनिक निर्माण मंत्री (सार्वजनिक उपक्रम के अलावा), नवम्बर २००९ से नवम्बर २०१० तक फिर से उप मुख्यमंत्री बने व सार्वजनिक निर्माण मंत्री (सार्वजनिक उपक्रम के अलावा) रहे,नवम्बर २०१० से सितम्बर २०१४ तक सार्वजनिक निर्माण मंत्री (सार्वजनिक उपक्रम के अलावा) रहे, अक्टूबर २०१९ में फिर से विधायक चुने गए।

**(सन्दर्भ: १३ वीं महाराष्ट्र विधानसभा सदस्यों का संक्षिप्त जीवन परिचय)**

## श्री. विजय उर्फ़ बालासाहब भाऊ साहब थोरात

**जन्म** : ७ फरवरी १९५३
**जन्म स्थान** : जोर्वे, तालुका -संगमनेर, जिला -अहमदनगर
**शिक्षा** : बी. ए. एलएलबी
**भाषा ज्ञान** : मराठी, हिंदी, अंग्रेजी
**वैवाहिक जीवन** : विवाहित, पत्नी -श्रीमती कांचन
**संतान** : ४ (एक बेटा, तीन बेटियां )
**व्यवसाय** : कृषि
**पार्टी** : भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

**विधानसभा क्षेत्र** : २१७, संगमनेर, जिला -अहमदनगर

**अन्य जानकारी** : विद्यार्थी जीवन में फर्ग्युसन कॉलेज ,पुणे में पढते समय ही राजनीति से जुड़ गए और पानी पंचायत, आंदोलन में हिस्सा लिया, १९८० में बीड़ी कामगार व किसानों के मुद्दे पर आंदोलन में सक्रिय हिस्सा लिया तथा ९ दिन की जेल की सजा काटी, डॉ. बाबासाहब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के नाम परिवर्तन आंदोलन में सक्रिय हिस्सा लिया, संगमनेर तालुका के शैक्षणिक विकास में सहयोग, भंडारदरा बाँध का पानी किसानों को खेती के लिए दिया जाय आंदोलन का नेतृत्व, निलवंडे बाँध पूरा हो इसके लिए आंदोलन किया, १९८९ में राज्य बीड़ी कामगार न्यूनतम वेतन समिति के अध्यक्ष बने, इस समिति की रिपोर्ट सरकार को पेश कर यह सिफारिस की कि महंगाई दर वृद्धि के हिसाब से इन कामगारों की वेतन वृद्धि की जाय। सूखा पीड़ितों के लिए मदद कार्य,१९९८ से २००० तक महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमिटी के महासचिव बने, २००८ में देशभक्त किशनवीर सामाजिक संस्था की तरफ से समाज कृतज्ञता पुरस्कार, २०१४ में यशवंत प्रतिष्ठान पुणे की तरफ से दिया जाने वाला यशवंत वेणु पुरस्कार, २०१५ में माधवराव लिमये फाउंडेशन की तरफ से कार्यक्षम विधायक पुरस्कार। १९८५ से वे लगातार महाराष्ट्र विधानसभा के विधायक के रूप में अपने विधानसभा क्षेत्र संगमनेर से चुनकर आते हैं। २०१४ से २०१९ के बीच वे महाराष्ट्र विधानसभा की रोजगार गारण्टी, आश्वासन, सार्वजनिक उपक्रम व पंचायत राज समितियों के सदस्य रहे। अक्टूबर १९९९ से २००४ तक बाँध निर्माण (कृष्णा खोरे व कोंकण बाँध महामंडल को छोड़कर) मंत्री तथा लाभ क्षेत्र विभाग के राज्यमंत्री रहे, नवम्बर २००४ से अक्टूबर २००९ तक कृषि जल संधारण और खार जमीन विभाग के मंत्री रहे, नवम्बर २००९ से नवम्बर २०१० तक कृषि जल संधारण, रोजगार गारंटी योजना और स्कूली शिक्षा ( अतिरिक्त कार्यभार) मंत्री रहे, नवम्बर २०१० से सितम्बर २०१४ तक राजस्व व खार जमीन विभाग के मंत्री रहे। अपने इस कार्यकाल में उन्होंने राजस्व विभाग के दस्तावेजों को ऑनलाइन लाने में अग्रणी भूमिका निभाई, राज्य में कृषि योग्य जमीन का नए सिरे नापने का निर्णय किया। अक्टूबर २०१९ में फिर से विधानसभा के लिए विधायक चुने गए।

**(सन्दर्भ: १३ वीं महाराष्ट्र विधानसभा सदस्यों का संक्षिप्त जीवन परिचय)**

## डॉ. नितिन काशीनाथ राउत

**जन्म** : ९ अक्टूबर १९५२
**जन्म स्थान** : नागपुर
**शिक्षा** : एमए, एफबीएम, सीपीएल, एमएफए (नाट्य) पीएचडी
**भाषा ज्ञान** : मराठी, हिंदी, अंग्रेजी
**वैवाहिक जीवन** : विवाहित, पत्नी -श्रीमती सुमेधा
**संतान** : २ (एक बेटा, एक बेटी )
**व्यवसाय** : उद्योग / व्यापार
**पार्टी** : भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

**विधानसभा क्षेत्र** : ५७, नागपुर (उत्तर)

**अन्य जानकारी :** संकल्प संस्था के माध्यम से राज्य के कमजोर वर्गों के कल्याण के लिए कार्य, हर साल धम्मचक्र प्रवर्तन दिन के अवसर पर आने वाले भाविकों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने में सक्रिय भूमिका, निशुल्क स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन,१९८८ व १९८९ में राष्ट्रीय एकता के लिए 'संकल्प रन' और 'भीम ज्योति यात्रा' का आयोजन किया। १९९१ में डा. बाबासाहब आंबेडकर की १०० वीं जयन्ती पर नागपुर स्थित कस्तूरचंद पार्क में भव्य रैली का आयोजन किया, मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के नाम परिवर्तन आंदोलन में सक्रिय सहभाग लिया,१९८१ में चंद्रपुर में आयोजित दलित साहित्य सम्मलेन में हिस्सा लिया, १९९१ में विदर्भ साहित्य सम्मलेन में भाग लिया, २००२ में नागपुर में अस्मिता आदर्श रजत महोत्सव व साहित्य सम्मेलन का आयोजन,१९९० में नागपुर जिले के मकरधोकड़ा गांव में हुए जातीय दंगों के पीड़ितों को सबसे ज्यादा मदद की,१९९१ में मोवाड व नागपुर में बाढ.पीड़ितों की मदद, १९ अप्रैल २००० में संविधान बचाओ रैली, १९७० से राजनीति में सक्रिय, स्व. इंदिरा गांधी जी की गिरफ्तारी के विरोध में जेल भरो आंदोलन किया, १९९१ से लोकसभा चुनाव में उत्तर नागपुर विधानसभा क्षेत्र का प्रभारी, कोलकाता, बंगलुरु और नयी दिल्ली में आयोजित कांग्रेस अधिवेशनों में हिस्सा लिया, १९९९-२००४, २००४-२००९, २००९-२०१४ सदस्य, महाराष्ट्र विधानसभा, महाराष्ट्र विधानसभा की अनुसूचित जाति कल्याण समिति का सदस्य, आरक्षण अधिनियम समिति का सदस्य, विधानसभा रोजगार गारंटी समिति का सदस्य, वनोत्पादन चोरी संबंधित संयुक्त समिति का सदस्य, विधानसभा की रोजगार व स्वयं रोजगार समिति का सदस्य, दिसंबर २००८ से नवम्बर २००९ तक गृह, जेल, राज्य उत्पादन शुल्क व कामगार विभाग का राज्यमंत्री, २०१४ में रोहयो और जल संवर्धन विभाग का मंत्री, इससे पहले पशु संवर्धन, दुग्ध और मत्स्य विकास विभाग का मंत्री। अक्टूबर २०१९ में फिर से विधायक।

**(सन्दर्भ: १२ वीं महाराष्ट्र विधानसभा सदस्यों का संक्षिप्त जीवन परिचय)**

**राज्य के विकास में किसानों और सर्व सामान्य मेहनतकश जनता को केंद्र में रख स्वच्छ, पारदर्शक और निर्णयाभिमुख प्रशासन देने का संकल्प तथा राज्य की आर्थिक स्थिति जनता के सामने रखते हुए उसमें सुधार पर बल देना ही नयी सरकार का रोड मैप है। राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने विधान मंडल के संयुक्त सभागार में हुए अपने अभिभाषण पर भी इस बात पर विशेष बल दिया।**

# नये महाराष्ट्र का रोड मैप

राज्य की ७० फीसदी जनता खेती और खेती से सम्बंधित व्यावसाय पर निर्भर है। इसलिए राज्य का स्थायी विकास आगे ले जाने के लिए किसानों को चिंता मुक्त करने पर सरकार का विशेष ध्यान रहेगा। किसानों की फसल कर्ज मुक्त और चिंतामुक्त करने के लिए सरकार जो भी जरूरी होगा वह कार्यवाही करेगी। यही नहीं ग्रामीण अर्थ व्यवस्था की बिगड़ी हुई स्थित को सुधारने के लिए कदम उठाये जायेंगें।

कृषि उपज को योग्य भाव, मराठवाड़ा और विदर्भ क्षेत्र में स्थायी पानी आपूर्ति की व्यवस्था तैयार करने केलिए सरकार की तरफ से बहुत सी योजनाएं शुरु की जाएंगी।

## भुमिपुत्रों को आरक्षण

निजी क्षेत्रों की नौकरियों में ८०% स्थानीय लोगों को अवसर दिया जाय इसके लिए क़ानून बनाया जाएगा। इसके अतिरिक्त बेरोजगारी कम करने के लिए राज्य सरकार के तमाम रिक्त पडे पदों को भरने की प्रक्रिया शुरु की जाएगी। इससे रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी। इसमें महिलाओं को अवसर दिया जाएगा साथ ही उनकी सुरक्षा को भी प्राथमिकता दी जाएगी। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की लड़कियों को प्राथमिक से महाविद्यालयीन शिक्षण निशुल्क कराया जाएगा। राज्य में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा का दर्जा ऊँचा करने के लिए योजनाएं शुरु की जाएंगी। मानव विकास कार्यक्रम के तहत राज्य के पिछड़े वर्ग को विशेष निधि उपलब्ध कराई जाएगी तथा उनके स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविका के क्षेत्र पर अधिक ध्यान दिया जाएगा।

## मूलभूत सुविधाओं पर ध्यान

राज्य का आर्थिक विकास करते समय मूलभूत सुविधाओं में वृद्धि करने व पर्यावरण संरक्षण पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाएगा। आर्थिक दृष्टि से समाज की अंतिम पंक्ति में रह रहे वर्ग के लोगों की उन्नति के लिए विशेष ध्यान दिया जाएगा। इसके लिए राज्य में सस्ती व पौष्टिक भोजन की थाली १० रुपये में देने की योजना शुरु की जाएगी।

## रोजगार निर्माण

स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर निर्माण करने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में नया निवेश आये इसलिए नयी आईटी नीति बनायी जाएगी। सुशिक्षित बेरोजगार युवाओं को स्कॉलरशिप देने का कार्यक्रम निधारित किया जायेगा तथा नौकरी करने वाली महिलाओं के लिए महानगरों व जिला मुख्यालयों में चरणबद्ध तरीके से वसति गृह बनाये जायेंगें। आंगनवाड़ी सेविकाओं, आशा सेविकाओं व आशा गट प्रवर्तकों के मानधन व सेवा सुविधाओं में सुधार किया जाएगा। राज्य में आठ लाख स्वयं सहाय बचत समूहों का सक्षमीकरण के लिए सरकार प्रयत्न करेगी।

## स्वास्थ सेवा

सामान्य जनता के स्वास्थ्य के लिए सभी प्रकार की जांच की सुविधा के लिए तालुका स्तर पर एक रूपया क्लिनिक योजना शुरु की जाएगी। सभी जिलों में चरणबद्ध तरीके से मेडिकल कॉलेज और सुपर स्पेशियलिटी चिकित्सालय बनाये जायेंगें। प्रदेश के हर नागरिक को स्वास्थ्य बीमा कवच दिया जाएगा। इसके तहत विविध बीमा योजना को एकत्र कर एक रूप दिया जाएगा। नए निवेश को आकर्षित करने तथा राज्य में उद्योग -धंधे बढाने के लिए अधिक से अधिक सुविधाएं व लाइसेंस प्रक्रिया को सुलभ बनाने का प्रयास किया जाएगा।

## सुरक्षा

राज्य के सभी पुलिस स्टेशन, राष्ट्रीय सायबर अपराध पंजीयन पोर्टल से जोड़े जायेंगें। सायबर अपराध जांच में पुलिस की कार्य क्षमता को बढाने के लिए पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

## सांस्कृतिक

राज्य के ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत का जतन करने के लिए, गड, किलों के जतन और उनके संवर्धन के लिए मुंबई में मराठी भाषा भवन मुख्य केंद्र बनाया जाएगा। जबकि ऐरोली में मराठी भाषा उप केंद्र की स्थापना की जाएगी।

## अन्य

ज्येष्ठ नागरिकों को सामाजिक सुरक्षा देने के लिए विभिन्न उपाय किये जायेंगें। अन्न और औषधि नियमों का उलंघन करने वाली संस्थाओं के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। प्लास्टिक बंदी को जन सहयोग के माध्यम से सफल बनाने का कार्य किया जाएगा साथ ही राष्ट्रीय शुद्ध हवा कार्यक्रम के तहत आपदा प्रबंधन करने के लिए एकात्मिक समुद्री किनारा प्रक्षेप प्रबंधन प्रकल्प को अमल में लाया जाएगा। इसके साथ ही समुद्री किनारों पर गलत तरीकों से मछली पकड़ने वालों के खिलाफ भी कड़ी कार्रवाईकी जाएगी तथा पारम्परिक रूप से मछली पकड़ने वालों को प्रोत्साहन दिया जाएगा। महात्मा गांधी की १५० वीं जयन्ती के निमित्त उनके विचारों और आदर्शों को नयी पीढी तक ले जाने के लिए राज्य भर में विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इसके साथ साथ महाराष्ट्र -कर्नाटक सीमा विवाद में फंसे ८६५ गावों की मराठी भाषिक जनता के हक और संरक्षण की लड़ाई को अदालत में जोरदार तरीके से लड़ा जाएगा।

महाराष्ट्र विधानसभा के आम चुनाव २०१९ में २८८
विधानसभा क्षेत्रों से विजयी प्रत्याशियों का संक्षिप्त परिचय।

# हमारे लोक प्रतिनिधि

दुनिया में कुछ महान विभूतियों को उनके पुस्तकों से प्रेम के लिए भी जाना जाता है। मैकाले कहते थे 'पुस्तक पढने की मनाई कर कोई मुझे राजा बनाये तो मैं उस पद का त्याग कर दूंगा'। जीवन के अंतिम क्षणों में आलमारी में रखी पुस्तकें यही छूट जाएंगी यह जानकर 'वॉल्टर स्कॉट खूब रोया था। 'जो मेरी पुस्तकों को पढेग़ा वह मेरे ह्रदय को स्पर्श करेगा' साने गुरूजी अक्सर यह बात कहते थे। इसी परम्परा में भारतरत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर कहते थे 'पुस्तकों की वजह से जीवन को एक अर्थ मिलता है'। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को जीवन में ज्ञान प्राप्त करने के लिए बहुत कष्ट और कठिनाईयों का सामना करना पड़ा था।

भारतरत्न
डॉ. बाबासाहब आंबेडकर

**महापरिनिर्वाण दिन विशेष**

# ज्ञानसूर्य

**प्रतापराव सांलुखे**

भारतरत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को बचपन से ही पढने का बहुत शौख था। पिता उन्हें कुछ खान-पान की चीजों के लिए पैसे देते थे तो वे उससे पुरानी पुस्तकें खरीद कर पढते थे। पुस्तकों के बिना उन्हें पल भर भी चैन नहीं आता था। कॉलेज के दिनों में उन्होंने सही मायने में वाचन की शुरुवात की थी। पाठ्यक्रम की पुस्तकों को छोड़ अन्य पुस्तकों को पढऩा उन्हें अच्छा लगता था। उनका इस प्रकार का पठन -पाठन उनके पिता को पसंद नहीं था। वे उन्हें अक्सर कहा करते थे' पहले पाठ्यक्रम की पुस्तकों का अध्ययन फिर दूसरी पुस्तकों को पढऩा चाहिए। इसके जवाब में भीमराव उन्हें कहते थे' बाबा मैं कभी अनुतीर्ण नहीं रहा हूँ, हर साल पास होता हूँ, फिर मेरे साथ पढाई को लेकर इस तरह की शर्तें क्यों लगाते हैं?

अमेरिका में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने अपने आपको विद्या की दुनिया में डुबा लिया था। उन्होंने वंहा इस बात का निश्चय किया था कि' वे अपना आगे का पूरा जीवन अध्ययन में ही लगा देंगें'। इस प्रभावशाली महान लक्ष्य की वजह से उनके जीवन की पताका फहरती रही। कोलंबिया विश्व विद्यालय में उन्होंने समाज शास्त्र, अर्थ शास्त्र, मानव विज्ञान, इतिहास और विशेष रूप से सार्वजनिक वित्त विषय की

## किताबों के लिए घर

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने मुंबई में अपनी प्रिय किताबों के लिए 'राजगृह 'नाम से घर बनाया था। यंहा पर २५००० किताबें हुआ करती थी। आचार्य एम. वी. दोंदे कहते थे' डॉक्टर साहब किताबों को अपने प्राणों से ज्यादा प्रिय मानते थे और उनकी देखभाल भी अपने प्राणों की तरह करते थे। अपने स्वयं की निजी पुस्तकों के लिए अपने घर की एक मंजिल पर उन्होंने संग्रहालय और वाचनालय बनाया था। अपनी किताबों को कैसे ठीक से रख सकें इस सुविधा के साथ उन्होंने अपने घर को बनाया था। एक बड़ा दीवानखाना, उसमें गैलेरी, पुस्तकों से भरी हुई आलमारियां, आलमारियों में रखी हुई कुर्सियां, जगह जगह पर छोटी छोटी टेबल, सभी जगह किताबों की लाइनें ही लाइनें। यही नहीं कौनसी किताब कंहा है ,किस आलमारी में रखी हुई है उसका कवर कैसा और किस रंग का है इस बात की जानकारी डॉक्टर साहब को थी और वे बिना भूले इसे बताते भी थे, यह मेरा स्वयं का उनके साथ अनुभव है। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर हमेशा भारत के प्रमुख बुक डिपो, पुस्तकालयों, पुरानी पुस्तकों के बाजारों से नियमित रूप से किताबें खरीदते रहते थे। पुणे का भांडारकर बुक डिपो बाबा साहब की पसंदीदा दूकान थी। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जब पुणे में रहते थे तब उन्होंने गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा बनाये गए 'सर्वेंट सोसायटी ऑफ़ इण्डिया' के वाचनालय में अध्ययन किया था।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की किताबों के लिए ही राजगृह

रत्नागिरी में रहते समय वे तिलक ज्ञान मंदिर में जाय करते थे। मुंबई के कालबा देवी परिसर में 'न्यू एन्ड सैकेंड हैण्ड' किताबों की दुकान में प्रबंधक का काम करने वाले चंद्रकांत रामराव मानकामे नामक व्यक्ति भी डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के पुस्तक प्रेम के एक गवाह रहे। मानकामे एक प्रसंग को याद करते हुए बताते हुए कहते हैं यह घटना १९४७ की है। चार पांच किताबें लिए मैं दूकान के बाहर खड़ी एक पुरानी गाड़ी की तरफ गया। उसमें एक व्यक्ति सूट बूट पहने हुए बैठा था।उस व्यक्ति का रंग रंग, चहरे पर तेज था, किताबें लेते ही वह वंहा से चला गया। किताबें देने के बाद मैं जब वापस दुकान में आया तो मालिक ने पूछा 'मानकामे तुम्हें पता है वह व्यक्ति कौन था ? मैंने ने अनभिज्ञता के रूप में अपनी गर्दन हिलाई। मालिक ने बोलै अरे वे डॉ. बाबासाहब आंबेडकर थे,उनके जैसा कोई विद्वान नहीं है, वे एक महान व्यक्ति हैं। उसके बाद डॉ. बाबासाहब आंबेडकर हमारी दूकान में बहुत बार आये।

पढाई कर पी. एचडी की डिग्री हांसिल की। अमेरिका के एक विद्वान का उनके बारे में कहना है कि 'डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की डिग्रियों से दुगुना उनकी अध्ययन साधना थी'। भीमराव ने अध्ययन को लेकर अपनी जो लगन दिखाई उसका तोड़ अमेरिका में भी नहीं। उनके बारे में एक और प्रोफ़ेसर का यह कहना था कि' भीमराव जैसा मेधावी विद्यार्थी उन्होंने अपनी जिंदगी में नहीं देखा था। अपनी आगे की पढाई के लिए डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने लंदन विश्व विद्यालय में प्रवेश लियाऔर डी. एससी के लिए प्रबंध लिखना निधारिंत किया। उन्होंने लंदन पॉलिटिकल स्कूल में प्रवेश लिया। वंहा वे नियमित रूप से पुस्तकालय में जाया करते थे और अपने पसंदीदा पुस्तकों का अध्ययन किया करते थे। पुस्तकालय बंद होने तक वे हर दिन करीब १८ -१८ घंटे लगातार बैठ कर स्मरण और चिंतन करते रहते थे। सुबह के समय भोजनालय में जो कुछ मिलता था वही खाकर पूरा दिन गुजारते थे। पैसों के अभाव में मीलों पैदल यात्रा करते थे। दोपहर में भोजन से ज्यादा पढ़ने को अहमियत देते थे। दुर्लभ पुस्तकों के लिए वे पुस्तकालय से विनती करते थे। मनपसंद किताबों के लिए दूकान -दूकान घूमकर वे तलाश भी करते थे। रात होने पर वे हल्का आहार लेकर रात भर पढ.ाई में लीन हो जाते थे, यही उनकी तपस्या थी ! विद्या की ऐसी कठोर साधना डॉ. बाबासाहब आंबेडकर करते थे और इसी के परिणामस्वरूप उन्होंने ने डी. एससी की डिग्री हांसिल की।

## कर्मयोगी

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर सही मायने में विद्या के कर्मयोगी थे। 'Who were the Shuradas and How they come to Fourth Varnas' इस शोध ग्रन्थ को लिखने से पहले उन्होंने ऋग्वेद को कम से कम १० बार पढा। संस्कृत भाषा में पारंगत होने की उनकी प्रबल आकांक्षा थी। अपनी मेहनत और लगन से उन्होंने संस्कृत भाषा सीखी। अंग्रेजी भाषा पर भी उनकी अच्छी पकड़ थी। एक बार डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को आँखों की बीमारी हो गयी। डॉक्टर ने उन्हें पढ़ना बंद करने को कहा। डॉक्टर की इस बात का उन्हें इतना दुःख हुआ की उनकी आँखों में आंसू आ गए। 'उन्होंने कहा जब तक पढ.रहा हूँ तब तक मैं जीवित हूँ ,पढ़ाई बंद करके मैं ज्यादा दिन जिंदा नहीं रह सकूंगा'। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर अपने पुस्तक प्रेम के बारे में अक्सर कहते थे' पुस्तकों के साथ शांत जीवन जीने जैसा दूसरा कोई आनंद नहीं है। पुस्तकें मुझे सिखाती हैं नयी राह बताती हैं और मुझे वे आनंद देती हैं। एक बार पंडित मदन मोहन मालवीय ने बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय के लिए डॉ. बाबासाहब आंबेडकर से पुस्तकों की मांग की थी और उसके बदले में उन्हें पांच लाख रुपये देने की तैयारी भी की थी। लेकिन डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने कहा 'मेरी पुस्तकें मुझसे दूर कर आप मेरी जान लेने जैसे करेंगें। एक बार कोलंबिया विश्व विद्यालय ने अपने प्रिय विद्यार्थियों का अभिनन्दन करने तथा उनकी एलएलडी की डिग्री बहाल करने के लिए डॉ.

बाबासाहब आंबेडकर को बुलाया। अमेरिका में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर थोडे से बीमार पड़ गए। उस समय मुंबई कॉलेज के प्राचार्य ने उन्हें उनकी बीमारी को लेकर पत्र लिखा ,जिसमें इस बात का भी उल्लेख किया कि नयी प्रकाशित पुस्तकों का पार्सल मुंबई आया है। इस पत्र के जवाब में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने लिखा ' मैं यंहा से शीघ्र ही भारत आऊंगा ,वे पुस्तकें मुझे पढ़नी हैं, इसलिए उन्हें मेरे वाचनालय में लाकर रख दीजिये। अपनी बीमारी के बारे में उन्होंने उस पत्र में एक वाक्य तक नहीं लिखा था। किताबों को लेकर इतना विलक्षण लगाव था उनका। बिहार में प्राचीन कालीन नालंदा विश्व विद्यालय की पवित्र भूमि को देख उनकी आँखों में आंसू आ गए थे। किसी ने उनसे पूछा बाबा साहब आप क्यों रो रहे हैं ? इसके जवाब में उन्होंने कहा' आज वह विश्व विद्यालय यंहा होता तो उसमें रखे दुर्लभ ग्रंथों को मैं पढ.पाता था। उनके इस जवाब में पुस्तकों के प्रति उनके लगाव का हमें पता चलता है। निरंतर अध्ययन कर वे सत्य की खोज में लगे रहते थे।

## किताबों को लेकर निष्ठा

यह प्रसंग उस समय का है जब डॉ. बाबासाहब आंबेडकर संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष हुआ करते थे। संविधान निर्माण करने में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को कुछ मौलिक अंग्रेजी पुस्तकों से मदद मिलेगी यह सोचकर प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु ने उन्हें पुस्तकों की एक सूची भिजवाई। ये पुस्तकें दुर्लभ तो थीं ही साथ ही साथ क़ीमती भी थीं। इसलिए नेहरु ने उस सूची के साथ उन पुस्तकों की कीमत का धनादेश भी भेजा। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने पंडित जी द्वारा भेजी गयी सूची पढी और धनादेश देकर उन्हें आश्चर्य भी हुआ। पंडित जी ने जो सूची भिजवाई थी, उस पर खाली जगह में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने लिखा 'पंडित जी आपने पुस्तकों की जो सूची भेजी है वह काफी उपयोगी है, साथ ही उसके धनादेश भी भेजा है उसके लिए धन्यवाद ! ये पुस्तकें महत्वपूर्ण थीं इसलिए उन्हें मैंने पहले ही खरीद रखा है। वह पत्र और धनादेश डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने वापस नेहरु को भेज दिया। यह प्रसंग छोटा है लेकिन इससे यह बात पता चलती है कि डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की किताबों को लेकर किस स्तर की निष्ठा थी।

## रेल्वे सलून

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का सबसे प्रिय स्थान था रेल्वे का सलून और इसके पीछे जो कारण था वह यह कि उन्हें वंहा बैठकर किताबें पढ़ने को मिलती थी। २५ अप्रैल १९४८ को वे उत्तर प्रदेश में शे. का. फे. के अधिवेशन के लिए गए हुए थे। उस समय उत्तर प्रदेश की राज्यपाल सरोजिनी नायडू हुआ करती थी। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को लेने के लिए सरोजिनी नायडू रेल्वे स्टेशन पंहुची और कहा 'डॉक्टर साहब मैं आपको राजभवन ले जाने के लिए आयी हूँ आप मेरा निमंत्रण स्वीकार करें। इस पर डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने कहा' बहन यात्रा के दौरान में रेल्वे के सलून में ही रहता हूँ और लेखन तथा वाचन करता हूँ। इसके पीछे कारण यह है की यंहा मेरे साथ मेरी मित्र पुस्तकें हुआ करती हैं और इन्हें छोड़कर मैं कंही नहीं जा सकता हूँ। मैं अपने इन मित्रों को छोड़कर एक मिनट भी आराम से नहीं बैठ सकता। अब इतने मित्रों को साथ लेकर मैं आपके अतिथि गृह में कैसे आ सकता हूँ। इस पर नायडू ने कहा कि आपकी यह बात सत्य है ,क्योंकि जंहा -जंहा मैं देख रही हूँ आपके ये मित्र भरे हुए हैं। आपका अध्ययन बहुत प्रभावी है, भारत माता को आपके जैसे ज्ञानी सुपुत्र पर गर्व है।

## पठनशीलता

भूकंप से ध्वस्त नेपाल के काठमांडू शहर में २० नवंबर १९५६ को जब अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिषद का आयोजन किया गया तो डॉ. बाबासाहब आंबेडकर उसमें विशेष रूप से उपस्थित हुए थे। उस प्रसंग को याद करते हुए दैनिक 'बोधिसत्व' के संपादक वी आर रणपिसे कहते हैं। सुबह का समय था, नवम्बर महीने में नेपाल में किस तरह की ठंड होगी कल्पना की जा सकती है। हिमालय की सफ़ेद बर्फ जमी ऊंची ऊंची पहाड़ियों के बीच काठमांडू शहर बसा हुआ है। ऐसी ही एक ठंडी सुबह में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के साथ मैं एक बौद्ध विहार में गया। विहार के पास ही एक शिल्प प्रदर्शनी लगी हुई थी। उस प्रदर्शनी में तथागत बुद्ध की एक भव्य और आकर्षक मूर्ति थी। इस प्रदर्शनी में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने बहुत समय बिताया। वंहा उन्होंने कार्यकर्ताओं से तथागत की मूर्तियों की हर मुद्रा के बारे में जानकारी ली। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर वंहा कुछ देर तक धूप में कुर्सी पर बैठे थे। हमारी गाड़ी कंही गयी हुई थी और उसे आने में कुछ देर लगी। विहार से जब बाहर निकले तो हमें सड़क के बाएं किनारे 'पारमिता 'का ग्रन्थ संग्रह दिखाई पड़ा। नेपाली और नेवारी भाषा में लिखे इस विश्वोद्धारक बौद्ध ग्रन्थ को देखते समय डॉ. बाबासाहब आंबेडकर को बहुत आनंद हुआ। नेवारी भाषा में लिखे उस बौद्ध विश्वकोश को भारत लाने की उनकी इच्छा थी लेकिन दुर्भाग्यवश वैसा हो नहीं सका।

राजनीति, समाज नीति, अस्पृश्य उद्धार तथा देश का संविधान लिखने का काम करते समय भी बाबा साहब आंबेडकर ने पठन की अपनी लगन को संभालकर रखा था। राजनीति व समाज के लिए काम करते समय अपने मूल्यों का ह्रास नहीं हो इसके लिए किताबों का वे सहारा लेते थे। उन्हें पता था कि किताबों का ज्ञान और विचार आपको संयमित रख सकता है। ज्ञान देने तथा विचारों को समृद्ध करने वाली पुस्तकों को डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने जीवन भर अपने हृदय के करीब रखा। 'बुद्ध और उनका धम्म' इस पुस्तक पर हाथ फिराते हुए उन्होंने अपने जीवन की अंतिम सांस ली।

**डॉ. बाबासाहब आंबेडकर एक कुशल व प्रवीण वकील थे। मुंबई उच्च न्यायालय में वकालत करने वाले डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की पहचान एक प्रसिद्द बैरिस्टर के रूप में थी। उन्होंने अपनी विद्वता और तर्क शक्ति के आधार पर अनेक लोगों के जीवन में आनंद की ज्योति जलायी और सुख दिलाया।**

# कानूनविद्

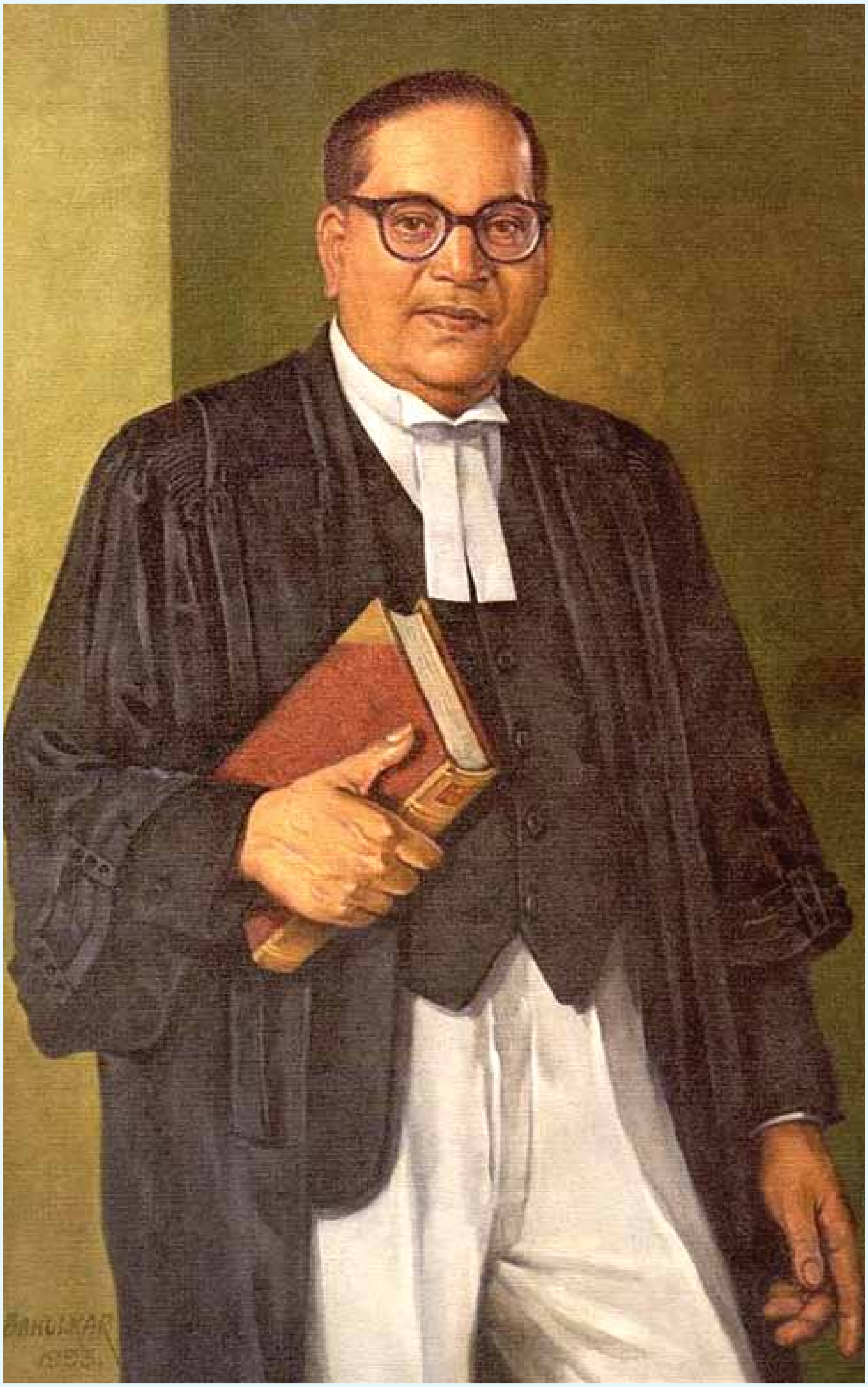

**प्रभाकर ओव्हाल**

क्रांतिसूर्य भारत रत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की भारत के संविधान निर्माता और पद दलितों के मसीहा के रूप में पूरी दुनिया में पहचान है। इंग्लैण्ड, अमेरिका के विश्व प्रसिद्द विश्व विद्यालयों में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचारों को पढाया जाता है। श्रीलंका के मधुरनकुलिया में 'डॉ. बाबासाहब आंबेडकर कम्युनिटी सेंटर से उनके विचारों के प्रचार -प्रसार का काम होता है। भारत के महापुरुषों में से डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का पहला शिल्प जापान की प्राचीन धम्मभूमि, कोयासन में बनाया जा रहा है। यही नहीं यंहा पर हमारे पड़ौसी देश पाकिस्तान द्वारा अंतरराष्ट्रीय परिषद के रूप में एक चर्चा शुरु की है जिसका शीर्षक है 'हमें भी एक आंबेडकर चाहिए'। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर एक अच्छे वकील थे और बहस के दौरान अपने प्रति प्रश्नों से वे बहुत से लोगों को हैरान कर देते थे। मुकदमों का सत्य अदालत के सामने उजागर कर उन्होंने बहुत से लोगों को न्याय दिलाया था। अदालत में किसी भी मुकदमें में वे बिना अभ्यास किये बहस या पेशी के लिए नहीं जाते थे। अभ्यास करने के लिए वे रात रात भर जागते थे और इस वजह से उनके सहायक वकील बहुत परेशान होते थे कि उन्हें भी उनके साथ जागना पड़ता था। अभ्यास के बाद ही मुकदमें की बहस में आने की उनके कार्य की बहुत से न्यायाधीशों ने मुकदमें के आदेश में उनकी प्रशंसा भी की है। विलक्षण कुशाग्र बुद्धि और अंग्रेजी भाषा में उनकी पकड़ की वजह से जब वे अदालत में तर्क करते थे तो न्यायाधीश भी उनको सुनकर दंग रह जाते थे। मुंबई उच्च न्यायालय में वकालत करने वाले डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की पहचान एक प्रसिद्द बैरिस्टर के रूप में हो गयी थी।

## कटु अनुभव

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के चरणों से

## अदालती लड़ाइयों का शुभारम्भ

नाशिक जिले के प्रथम श्रेणी उप न्यायाधीश का एक प्रसंग है। उसमें वह जज कहता है 'आज मेरी अदालत में एक महार जाति का बैरिस्टर आया था। उसने अपना काम यानी गवाहों की जांच और जिरह बहुत ही अच्छी तरह से की। वह व्यक्ति बहुत मेहनती, विद्वान और अच्छा था। इसी नाशिक शहर में बाबासाहब को पहला मुक़दमा सितम्बर १९२३ में मिला था। आडगांव, नाशिक निवासी पुंजाजी जाधव के वकील के रूप में उन्होंने पहला मुक़दमा लड़ा। जाधव का पैतृक खेत एक मारवाड़ी के खिलाफ गिरवी रखा हुआ था, इस अदालती लड़ाई के माध्यम से बाबासाहब ने उसे वापस जाधव को दिलाया।

महाराष्ट्र के अनेक न्यायालय पावन हो गए हैं। बाबासाहब ने सामाजिक विचारधारा के तहत अनेक मुकदमें लड़े। लंदन में बैरिस्टर की शिक्षा हांसिल करते समय बाबासाहब को बहुत परेशानियां उठानी पड़ी थीं। बैरिस्टर बनकर जब वे भारत आये और महाराष्ट्र में वकालत शुरु की उस समय उनको अस्पृश्यता के कड़वे अनुभव हुए। बार के पुस्तकालय में वे जिस टेबल पर बैठते थे, उच्च जाति के वकील उसके आस-पास भी नहीं आते थे। जिस उच्च न्यायालय में उन्हें अस्पृश्यता का यह कड़वा अनुभव मिला आज वे ही अदालतें उनके द्वारा कठोर मेहनत कर बनाये हुए संविधान को आधार मानकर चल रही हैं। इसे बाबासाहब की एक जीत के रूप में देखा जा सकता है। बाबासाहब के जीवन चरित्र के उच्च व्यक्तित्व के विविध पहलुओं को देखकर कोई भी आश्चर्यचकित हो सकता है। जब बाबासाहब बैरिस्टर बनकर भारत आये उस समय कोल्हापुर के राजर्षी शाहू महाराज ने उन्हें रथ पर बिठाकर बहुत बड़ा जुलुस निकाला था। बाबासाहब उस समय मुंबई में परेल की एक बैठी चाल में रहते थे। शाहू महाराज यंहा भी उनका अभिनन्दन करने आये थे। एक बैरिस्टर बना विद्वान अभी तक चाल में रहता है यह देखकर शाहू महाराज को आश्चर्य हुआ था। शाहू महाराज ने उन्हें कहा 'बाबासाहब आप इस चाल में रहते हुए भी कितने बड़े विद्वान बन गए ! इसके लिए मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ। इस पर बाबासाहब ने कहा 'इस चाल में रहकर बच्चे बच्चियों के शोर वाले घर में मैंने इतनी पढाई की इसमें मुझे कोई परेशानी नहीं हुई। इसका कारण यह है कि मैं एक बार पढाई करना शुरु

करता हूँ तो मेरे कानों में कोई भी बात सुनाई ही नहीं देती।

## जिरह

वरिष्ठ स्वतंत्रता सैनानी शंकरराव मोरे व शंकर राव जेधे ने पुणे में एक भाषण के दौरान महान विचारक अण्णासाहेब भोपटकर के खिलाफ कड़े शब्दों में टीका की थी। भोपटकर ने इस सम्बन्ध में पुणे की अदालत में एक वाद दायर कर दिया। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का शंकरराव मोरे व शंकर राव जेधे से कड़ी राजनीतिक शत्रुता थी। लेकिन फिर भी उन्होंने अपना वकील डॉ. आंबेडकर को ही चुना। अदालत में सुनवाई के दौरान डॉ. आंबेडकर ने भोपटकर के साथ तगड़ी जिरह की। सवालों का जवाब देते देते भोपटकर पसीने पसीने हो गए और उनकी स्थिति विचित्र हो गयी। उनके साथ यह जिरह आधी ही रह गयी और उन्होंने अदालत से अगली तारीख ले ली। अण्णासाहेब भोपटकर, महाराष्ट्र के इअतने बड़े विचारक थे की अदालती जिरह में इअतनी हालत खराब हो गयी की उन्होंने अगली तारीख पर वह मुक़दमा ही वापस ले लिया। भारतीय संविधान के निर्माता और कानूनविद डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने थाने की अदालत में चार मुकदमें लड़े थे। इनमें से प्रमुख था चिरनेर सत्याग्रह में गिरफ्तार ब्राह्मण आरोपी के पक्ष में बाबासाहब खड़े हुए। इस मामले में हत्या के आरोपों के तहत आठ लोगों का पक्ष रखकर उन्होंने उन्हें आरोपों से मुक्ति दिलाई।

## निर्दोष छुड़ाया

महाड के चवदार तालाब सत्याग्रह का मुक़दमें के पांच आरोपियों को अलिबाग की अदालत ने दोषी ठहराते हुए चार महीने की सश्रम सजा सुनायी थी। इस मुकदमें की अपील ठाणे की अदालत में की गयी। इस मुकदमें की जिरह करने पहली बार बाबसाहब २४ सितम्बर १९२७ को ठाणे आये थे। जिला अदालत ने निचली अदालत की सजा को बरकरार रखा। वसई, माणिकपुर में किसान मर गए थे। इस सम्बन्ध में अलेप डिब्रेट, शुक्रिया अलाइस फ्रांसिस ,बास्कियो दमेल और जेसुलुसा नामक शिक्षक पर हत्या का मुकदमा चल रहा था। इनका पक्ष रखने के लिए बाबासाहब १३ अक्टूबर १९२८ को ठाणे कोर्ट में आये और इन सभी को आरोप मुक्त कराया।

## फांसी टली

दक्षिण सोलापुर, होटगी के शिवप्पा पाटिल की फांसी की सजा बाबासाहब की

वजह से ही टली। यह घटना १९३६ की है। पूर्व विधायक गुरुनाथ पाटिल के भाई सिद्धामप्पा पाटिल ने बताया कि एक खून के मामले में अंग्रेजों में मेरे पिता को फांसी की सजा दे दी। सिर्फ बाबासाहब आंबेडकर की वजह से उनकी फांसी की सजा रुकी और हमारे पाटिल परिवार की वंश बेल आगे बढी। और यही वजह है की आज भी हमारे घराने में भगवान की पूजा से पहले बाबासाहब की प्रतिमा की पूजा की जाती है। पिछले ७२ सालों से हम इस परंपरा का पालन करते आ रहे हैं।

बाबासाहब ईश्वरवादी नहीं थे और महापुरुषों को ईश्वर का रूप देना समाज के हित में नहीं है लेकिन फिर भी वह महामानव हम लोगों के लिए ईश्वर ही है। हत्या का यह मुकदमा बाबासाहब लड़ने वाली है यह खबर उन दिनों चर्चा का विषय बन गयी थी। बाबासाहब जब इस मामले में बीजापुर के अदालत परिसर में पंहुचे तो उनकी जिरह और तर्क सुनने के लिए वंहा लोगों का मेला जैसा लग गया। फांसी की सजा से मुक्ति मिलने के बाद मेरे भाई गुरुनाथ, बहन हीराबाई और मेरा जन्म हुआ यदि सजा खत्म नहीं हुई होती तो हमने यह दुनिया ही नहीं देखी होती। बाद में मेरा भाई गुरुनाथ, विधायक बना और पाटिल घराने का नाम राजनीतिक क्षेत्र में बढा और यह सब उस मुकदमें में बाबासाहब की जीत की वजह से ही संभव हो सका, बाबासाहब के अहसान का कर्ज हम नहीं चुका सकते। हमारे परिवार के लिए तो वे ईश्वर का रूप लेकर मदद करने आये। १४ अप्रैल को बाबासाहब की जयन्ती के अवसर पर सम्पूर्ण पाटिल परिवार एकत्र होकर उनकी प्रतिमा का पूजन करता है।

## विद्वतापूर्ण तर्क

१९४० में बाबासाहब नागपुर हाईकोर्ट में बाबा मुक्तावनदास, जिन्हें की सजा हुई थी का मुक़दमा लड़ने गए थे। जिस दिन नागपुर कोर्ट में इस मुकदमे की पेशी थी उस दिन बड़ी संख्या में लोग अदालत परिसर में बाबासाहब की जिरह और उनके तर्क सुनने को जमा हुए थे। भीड़ इतनी हो गयी थी कि अदालत परिसर में पांव रखने की जगह नहीं थी। लोगों की इस प्रचंड भीड़ को देख बाबसाहब ने कहा था यह राजनीतिक सभा नहीं अदालत है। बाबासाहब की पैरवी की वजह से मुक्तावनदास की फांसी की सजा निरस्त हो गयी थी। एक घटना १९५० की है। मुंबई रेल्वे स्टेशन जिसे आजकल छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस के नाम से जाना जाता है पर बंसीलाल बाबू रामटेके की नियुक्ति टिकट संग्रहणक के रूप में हुई थी। बंसीलाल मूलरूप से राजनांदगांव के निवासी थे और एक मामले में उनको जेल हुई थी। बाबासाहब ने बंसीलाल का मुक़दमा लड़ने का निर्णय किया और उससे मिलने जेल में गए। बाबासाहब ने वंहा बंसीलाल से कहा मेरी फीस तो बहुत ज्यादा है तुम मुझे कितना दोगो? इस पर बंसीलाल ने कहा बाबसाहब मैं आपको अपनी जान भी दे सकता हूँ। बाबासाहब ने उससे कहा जान नहीं चाहिए इस जीवन का इस्तेमाल बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए करना। जेल से रिहा होने के बाद बंसीलाल बौद्ध धर्म के प्रचार में लीन हो गया। वह आंबेडकर जयन्ती और बुद्ध जयन्ती के दिन हाथी पर तस्वीर रखकर जुलुस निकालता था।

## मदद का हाथ

बाबासाहब ने दक्षिण सातारा जिले के मिरज तालुका के नांगोळे गांव की लिंगुबाई जैसी एक अनाश्रित विधवा महिला को मदद की। लिंगुबाई अपने पति मारुती लांडगे के साथ मुंबई में रहती थी। उनके पति की अचानक मौत हो गयी। लिंगुबाई बाबासाहब से मिलने मुंबई स्थित उनके आवास राजगृह गयी। बाबासाहब ने जिस कंपनी में लिंगुबाई के पति नौकरी करते थे उसके खिलाफ मुक़दमा किया लेकिन जिस दिन उसकी पेशी थी उसी दिन लिंगुबाई का अढाई साल का बच्चा बीमार हो गया। लिंगुबाई ने अपने बीमार बच्चे को बाबासाहब के चरणों में रखते हुए दिल से यह विनती की कि वे उनके बच्चे को बचा लें, यह बच्चा ही उसके परिवार का कुल दीपक है। बाबा साहब ने लिंगुबाई को कहा, भले ही यह बच्चा आपके परिवार का कुलदीपक है लेकिन यह मेरे क्षत -विक्षत समाज का अंकुर है। वे उस बच्चे के सिर पर हाथ फिराते हैं और उसके मुंह से दूध की बोतल लगाते हैं। बाबासाहब ने इस मुकदमें में अपनी हर कोशिश की और उसे जीतकर लिंगुबाई को न्याय दिलाया।

**डॉ बाबासाहब आंबेडकर के असंख्य अनुयायियों ने देशभर में अनेकों विहार, स्मृति स्थल बनाये हैं। विहारों में स्मारकों के पास बाबासाहब के पवित्र अस्थि कलशों की भी विधिवत स्थापना की गयी है। भारत में अनेक जगहों पर बाबासाहब के अस्थि कलश हैं। उन स्थलों का दौरा करना, बाबासाहब के विचारों से जुड़ना जैसा है।**

# बाबासाहब के अस्थि स्थल

**मिलिंद मानकर**

६ दिसंबर १९५६, भारतीय बौद्धों के जीवन का एक शोकाकुल दिवस है। इस दिन देश के गरीब -दुर्बल दलितों के तारणहार, करोड़ों लोगों के उद्धारक, भारतीय संविधान के शिल्पकार, भारत रत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का महापरिनिर्वाण हुआ। इस अवसर पर भारत ही नहीं दुनिया के अनेक नेताओं, समाज सुधारकों ने बाबासाहब को श्रद्धांजलि दी थी। उस समय जवाहर लाल नेहरु ने अपने उदगार में कहा था 'भारत के हिन्दू समाज की अनिष्ट रूढियों के खिलाफ विद्रोह के प्रतीक थे'।

बाबासाहब का महापरिनिर्वाण राजधानी दिल्ली में हुआ था लेकिन उनका अन्त्य संस्कार मुंबई में हुआ। उनके निवास स्थान 'राजगृह' से निकली अन्त्य यात्रा मुंबई के इतिहास में 'न भूतो न भविष्यति' ऐसी महाप्रयाण यात्रा थी। देश के कोने -कोने से इस महाप्रयाण यात्रा में लाखों अनुयायी शामिल हुए थे। हर कोई 'बाबा ... बाबा' बोलता हुआ रो रहा था। पत्थरों भी पिघलकर पानी हो जाएँ ऐसा हृदय स्पर्शी महाप्रयाण का यह दृश्य था। भीम चौपाटी में दादर स्थित स्मशान भूमि में बाबासाहब के पार्थिव शरीर को उनके चिरंजीव भैयासाहब ने ७ दिसंबर १९५६ को शाम ७ बजकर ३० मिनट पर अग्नि दी। इस महाप्रयाण यात्रा में शामिल हुए कुछ भीम अनुयायियों ने अपार श्रद्धा और निष्ठा के रूप में बाबासाहब पर काव्य सुमनों की श्रद्धांजलि अर्पण की थी, किसी ने महापरिनिर्वाण पर पोवाडा लिखे, किसी ने राख लगायी, किसी ने कुछ अस्थियां इकट्ठी की। करुणामयी तथागत बुद्ध का जब महापरिनिर्वाण हुआ था उस समय उनकी अस्थि फूलों को ६० हिस्सों में बांटा गया था। उन पर स्तूप बनाये गए। कुछ समय बाद सम्राट अशोक ने पूरे देश में ८४ हजार स्तूप और विहार बनाये जिनका इतिहास में वर्णन है। इसी बात से प्रेरणा लेकर आधुनिक युग में बाबासाहब के अनुयायियों ने देश भर में विहार और स्मृति स्थल बनाये। विहारों में स्मारकों के पास बाबासाहब के पवित्र अस्थि कलशों को भी विधिवत स्थापित किया गया है। भारत में अनेक स्थानों पर बाबसाहब के अस्थि कलश हैं।उन स्थलों का दौरा करना, बाबासाहब के विचारों से जुड़ना जैसा है। ६ दिसंबर को चैत्य भूमि पर जाना सबके लिए संभव नहीं हो पाता लेकिन आप नजदीक के किसी स्मृति स्थल पर जाकर बाबासाहब के प्रति अपना आदर भाव व्यक्त कर सकते हैं।

## चैत्यभूमि

'चैत्यभूमि' एक स्तूप के साथ -साथ डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का स्मृति स्थल है। यंहा पर बाबासाहब का अंतिम संस्कार हुआ था। 'स्तूप' एक बौद्ध शिल्प के स्मारक को कहा जाता है। बौद्ध भाइयों का विहार कहा जाता है। चैत्य, मृत व्यक्तियों के लिए बनाये जाते हैं। महान व्यक्तियों की अस्थि जमीन में गाड़कर उस पर पत्थर और मिट्टी का ढेर लगाकर उसे बनाया जाता है। उस जगह पर उस व्यक्ति की याद में 'स्तूप' बनाया जाता है। मुंबई की चैत्यभूमि के प्रवेशद्वार पर 'अशोक स्तम्भ' भले ही है लेकिन स्तूप में अंदर के भाग में बाबासाहब की मूर्ति लगाई गयी है। पुरंदरे स्टेडियम मुंबई में २४

नवम्बर १९६८ को पंचशील नगर में अखिल भारतीय बौद्ध परिषद का खुला अधिवेशन आयोजित किया गया था। उस समय महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री वसंतराव नाईक ने चैत्यभूमि के स्मारक की ज्योति जलाकर उद्घाटन किया था। दादासाहब गायकवाड़ के हाथों बाबासाहब के अस्थि कलश की स्थापना भी स्तूप में की गयी।

चैत्यभूमि स्मारक के चारों ओर दो फुट व्यास के चार स्तंभ बनाये गए हैं। स्मारक के तल में जमीन पर रैनफोर्ल्ड सीमेंट कांक्रीट के खंभों पर ५ फुट ३ इंच की ऊंचाई का एक चबूतरा बनाया गया है। इस चबूतरे के चारों ओर ६-६ फुट की खाली जगह छोड़कर स्तूप के आकार में २२ फुट ऊँचा और २८ फुट व्यास का गुंबद बनाया गया है। इस गुंबद पर छोटी सी छतरी भी लगायी गयी है। इसके लिए एक वर्गफुट का काला व पीला पत्थर इस्तेमाल किया गया है। गुंबद का सामने का दरवाजा सांची के स्तूप की तरह रखा गया है। गुंबद के अंदर वाले हिस्से में बीचोबीच चबूतरे पर ८ फुट ऊंचाई का स्तूप रखा गया है जिसमें बोधिसत्व बाबसाहब आंबेडकर की पवित्र अस्थियां रखी गयी हैं।

## आंबडवे

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का मूल गांव रत्नागिरी जिले के मंडणगड़ तालुका का आंबडवे , आंबेडकरी जनता ही फुले -शाहु -आंबेडकर आंदोलन के लोगों तथा सभी भारतीयों का एक प्रेरणा स्थल बन गया है। आज जिस स्थान पर बाबसाहब का स्मारक है, उसी से लगा हुआ एक कोने में पंद्रह हाथ लंबी मिट्टी की दीवार है जिस पर घांस का एक छप्पर डाला हुआ है। यह बाबासाहब का पुश्तैनी घर है। उसी स्थान में स्मारक के आकार के एक कक्ष में बाबसाहब की प्रतिमा लगाई गयी है और अस्थि कलश रखा हुआ है। बाबासाहब के सुपुत्र यशवंत उर्फ़ भैया साहब ने आंबडवे गांव में फरवरी १९६२ में अपने मूल घर के सामने एक छोटा सा बुद्ध विहार बनाया था। बाबासाहब की इस मूल भूमि के दर्शन लेने तथा उस मिट्टी को मष्तक से लगाने एवं इस भूमि को प्रमाण करने हर साल बड़ी संख्या में महाराष्ट्र ही नहीं देश के कोने -कोने से दलित बंधु और आंबेडकरी आंदोलन के लोग यंहा आते हैं।

## सिद्ध पिंप्री

नाशिक के आडगांव के भूमिपुत्र परेश लहानुजी लोखंडे डॉ. बाबसाहब आंबेडकर के अंगरक्षक थे। इसकी वजह से बाबासाहब का पिंप्री में जाना हुआ। बाबासाहब के बारे में एक हृदय को छू लेने वाली याद बार बार बतायी जाती है। बाबासाहब एक बार पिंप्री के राजवाड़े में एक सभा के लिए गए थे। उस सभा में वे किस स्थान पर बैठें यह सवाल खड़ा हुआ। गाँव में किसी के पास भी कुर्सी नहीं थी। अंत में गांव के दर्जी मुनीर चांद भाई की कुर्सी लाई गयी। इस कुर्सी पर बाबासाहब बैठे और सभा की। मुनीर भाई ने वह कुर्सी बाबासाहब की याद के रूप में संभालकर रखी।

लोखंडे ने अंत्यविधि के बाद बाबासाहब की अस्थियां सिद्ध पिंप्री में लायी। अस्थियां लाने के बाद लोखंडे ने गांव के लोगों से कहा कि यंहा हमें बाबासाहब का स्तूप बनाना है। गांव वालों ने उनकी इस बात को माना। लोगों ने चंदा इकट्ठा किया और ३० मई १९५८ को स्तूप बनकर तैयार हो गया। इस स्तूप को बनाने में परेश लोखंडे के साथ साथ उस समय वंहा के समाजसेवक पुलिस पाटिल हाडकू जाधव, सरपंच मुरलीधर लोखंडे ,दामोजी निकम, रामभाऊ जाधव, बाबुराव लोखंडे, जंगल लोखंडे, बाबुराव निकम, अर्जुन निकम, कोंडाजी लोखंडे, नागेश लोखंडे, रावबा लोखंडे, गणपतराव लोखंडे, अनाजी लोखंडे, नामदेव लोखंडे का भी योगदान रहा। गांव के लोगों द्वारा बनाया गया यह देश में बाबासाहब का पहला स्तूप है। इस स्तूप में बाबासाहब की अस्थियां चांदी की डिब्बी में रखी गयी हैं। सिद्ध पिंप्री में हर साल ३० मई को स्तूप दिवस मनाया जाता है। ६ दिसंबर को जिनका मुंबई में चैत्य भूमि पर जाना संभव नहीं हो पाता, ऐसे लोग हजारों की संख्या में यंहा आते हैं।

सिद्ध पिंप्री (नाशिक) स्थित राष्ट्रीय स्मारक, स्तूप

## अभिवादन भूमि

डॉ. बाबासाहब के महापरिनिर्वाण के बाद उनके अनुयायी उनकी अस्थियां अपने साथ लेकर गए और श्रद्धा के साथ उनका ध्यान भी रखा। सांगली जिले के आरग गांव में भी ऐसा ही हुआ। दिसंबर १९५६ को बाबासाहब की अस्थियां आरग में आयीं। उस दौर में गांव के अनेक दलित युवा तमाशा में काम करते थे तथा समेत सैनिक दल

## दीक्षा भूमि

लाखों दुखी लोगों को जीने की नयी आशा देने वाले क्रांति स्थल के रूप में नागपुर की दीक्षा भूमि जानी जाती है। इस पवित्र भूमि से ही डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने १४ अक्टूबर १९५६ को 'धम्मचक्र' को गति दी थी। बर्मा के वयोवृद्ध महास्थवीर चंद्रमणी के हाथों बाबासाहब ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया था। इस अवसर पर वंहा उपस्थित जन समुदाय को बाबासाहब ने तिसरण, पंचशील और २२ प्रतिज्ञा दी थी। उस समय 'बाबा साहब करें पुकार, बौद्ध धर्म करो स्वीकार के नारों से आकाश गूँज उठा था। कुछ समय बाद तीन करोड़ रुपये खर्च कर इस दीक्षा भूमि पर देश का सबसे विशाल स्तूप बनाया गया। इस स्तूप की ऊंचाई १२० फुट है। इसके निर्माण में शिल्पकार शिवदानमल की भूमिका प्रमुख है। इस स्तूप की चारों दिशाओं में विश्व प्रसिद्द सांची स्तूप जैसे तोरण द्वार बनाये गए हैं। इस स्तूप का भूमिपूजन समारोह जून १९७८ में बौद्ध परिषद के अध्यक्ष भदन्त अलबर्ट एडिरेसिंगे (श्रीलंका) के हाथों किया गया। दीक्षा भूमि स्थित आंबेडकर स्मारक की नींव कर्मवीर दादासाहब गायकवाड़ ने रची और आर. एस. गवई ने इसका कलश चढाया। हर साल विजयादशमी के दिन नागपुर में धम्मचक्र प्रवर्तन दिन मनाया जाता है। दीक्षा भूमि के मध्यवर्ती स्मारक में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की पवित्र अस्थियां रखी हुई हैं। स्मारक समिति के अध्यक्ष आर. एस. गवई के हाथों इसकी प्रतिष्ठापना करायी गयी है। धम्मचक्र प्रवर्तन दिन के रजत जयंती समारोह वर्ष के अवसर पर मुंबई के सिद्धार्थ कॉलेज की तरफ से बाबासाहब की अस्थियां स्मारक समिति को दी गयीं।

में भी काम करते थे। महापरिनिर्वाण दिवस के दिन वंहा के कई युवा तमाशा के सिलसिले में मुंबई में थे। उन्होंने समता दल के माध्यम से बाबासाहब की अस्थियां हांसिल करने का प्रयास किया। उन्हें कहा गया कि कुछ दिनों बाद मिलेंगी। कुछ दिनों में सांगली के बापट वसतिगृह में अस्थियों का एक पार्सल डाक द्वारा आया। आरग की बौद्ध बस्ती में एक छोटे से विहार में एक कलश में बाबासाहब की ये अस्थियां रखीं गयी। उसके बाद वंहा उसकी नियमित देखभाल और पूजा अर्चना शुरु हो गयी। १९६४--६५ में बौद्ध भिक्षुओं का एक दल इस गांव में आया। जमीन के नीचे अस्थियां रखकर और उसके ऊपर खड़े होकर पूजा अर्चना करने को उन्होंने गलत बताया। उनके सुझाव पर विहार बनाने का निर्णय किया गया। ६ दिसंबर १९६५ को जिले भर के हजारों अनुयायियों की उपस्थिति में अस्थि कलश बाहर निकाला गया और लोगों के दर्शन के लिए रखा गया। इस परिसर का नामकरण अभिवादन भूमि के रूप में किया गया। वर्तमान में पास ही एक हाल में चबूतरा बनाकर उस पर अस्थि कलश रखा हुआ है।

## प्रति चैत्यभूमि

सातारा जिले के फलटण गांव में भी बाबासाहब के चरण स्पर्श हुए थे। उन्होंने यंहा पर २३ अप्रैल १९३९ को 'प्रजा परिषद' का आयोजन किया था। दोपहर में बाबासाहब ने राजवाडे में जाकर श्रीमंत मालोजीराव निंबाळकर से मुलाक़ात की थी। इस परिषद की प्रत्यक्षदर्शी प्रख्यात लेखिका बेबीताई

कांबले के अनुसार 'मेरे दादू आजा स्वयंसेवक होने की वजह से मुझे बाबासाहब के करीब से दर्शन करने का अवसर मिला। जैसे ही गाड़ी का दरवाजा खुला और बाबासाहब के चरण फलटण की धरती पर पड़े और वैसे ही मैंने जूतों पर अपना शीश नवाया। आँखे उठाकर ऊपर देखा तो बाबासाहब का भव्य दिव्य चैहरा।

'बाबासाहब के महापरिनिर्वाण के बाद फलटण तालुका के निंभोरे गांव के रहने वाले सीताराम पिराजी कांबले, रामू कांबले, शिवराम कांबले बाबासाहब की अन्तयात्रा में शामिल होने मुंबई गए थे। उस समय उन्होंने बाबासाहब की अस्थियां अपने गांव लायी थी। जिले के अधिकाँश भीम अनुयायियों को यह बात पता नहीं थी। गांव के उत्साहित युवाओं ने इस बारे में जन जागृति की और यंहा पर बुद्ध विहार बनाया। विहार की दीवार पर बुद्ध और बाबसाहब के रेखाचित्र बनाये गए। चबूतरा बनाया गया उस पर तथागत बुद्ध की ध्यान मुद्रा में प्रतिमा स्थापित है। उसके बगल में एक मोटा खंभा बनाया है। इस विहार में छत में स्टील के कुम्भ में एक कलश में बाबासाहब की अस्थियां टांगी हुई हैं। जिन सीताराम पिराजी कांबले ने आरगे गांव में बाबासाहब की अस्थियां लायी थी विहार में उनका भी चित्र भी लगाया गया है।

यंहा हर साल ६ दिसंबर को बाबासाहब की अस्थियां लोगों के दर्शन के लिए रखी जाती हैं। २०१० में ६ दिसंबर को तालुका के विभिन्न गावों के भीम सैनिकों ने निंभोरे गांव तक अभिवादन रैली निकाली तथा अस्थि कलश के दर्शन किये। उस समय बहुत से संगठनों ने हर साल महापरिनिर्वाण दिन के अवसर पर बाबासाहब का अभिवादन करने के लिए निंभोरे में आने का संकल्प किया था। उसके बाद से यह निंभोरे गांव 'प्रति चैत्यभूमि' के नाम से पहचाने जाने लगा।

## अंकलखोप

अंकलखोप, जिला सांगली में भी बाबासाहब की अस्थियां हैं। जिसने अंकलखोप में बाबासाहब की सभा का आयोजन किया था उन्हीं गणपत लांडगे (आबा) के साथ बैठकर बाबासाहब ने सब्जी -रोटी खाकर सभा में एकत्र जन समुदाय को सम्बोधित किया था। बाबासाहब के महापरिनिर्वाण के बाद उनके चार निष्ठावान अनुयायी मुंबई में रक्षा विसर्जन के समय गए और वंहा से अस्थियां लेकर आये तथा अंकलखोप में स्मृति स्थल बनाया। इस अस्थि कलश की पूजा सूर्यपुत्र मा. यशवंतराव उर्फ़ भैया साहब आंबेडकर,

अंकलखोप

मा. दादासाहब रूपवते, मा. बी.सी कांबले, मा. पी.टी मधाले, मा. आवले बाबु आदि ने की थी। यंहा पर एक शिला पर इन सभी के नाम लिखे हुए हैं। प्रबुद्ध मंडल अंकलखोप ने यह शिलालेख २४ नवम्बर २००१ को लगायी है। १९३२ में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने यंहा पर एक सभा ली थी। इससे पहले १९२९ में बाबासाहब ने पेठ, तालुका वाळवा जिला सांगली में भी सभा ली थी। वर्तमान में यंहा बनाया हुआ बुद्ध विहार धम्म आंदोलन का एक ऊर्जा स्थान बना हुआ है। यह बुद्ध विहार

लोगों से चंदा एकत्र कर बनाया गया है।

## चैत्य स्मारक

मौजे पानगांव (तालुका -रेणापुर, जिला -लातूर) में लोगों ने रेडियो पर ६ दिसंबर को बाबासाहब के महापरिनिर्वाण का समाचार सुना। यह समाचार सुन दगडू धोंडिबा आचार्य, किशन लक्ष्मण आचार्य, यादव मुगाजी आचार्य, संतराम इराप्पा आचार्य, बैजनाथ कोंडिबा आचार्य, प्रभाकर रामराव आचार्य, सूर्यभान माधव आचार्य नामक युवा मुंबई के लिए रवाना हो गए। ७ दिसंबर की सुबह रक्षा विधि का कार्यक्रम होने और उसके बाद होने वाली भीड़ की संभावना को देख ये लोग लिंबाजी के साथ अन्त्य संस्कार के स्थान पर अस्थि दर्शन करने के लिए चल पड़े। वंहा पर सभी ने घुटनों के बल बैठकर अपने उद्धार कर्ता को श्रद्धा के साथ त्रिवार वंदन किया। बाबासाहब की अस्थि राख का तिलक सिर पर लगाया। लिंबाजी ने सबकी नजरें बचते हुए फिर से राख में हाथ डाला और मुट्ठी में जितनी राख आती है जेब में मुट्ठी डालकर वंहा से निकल गए। समुद्र के किनारे आकर जेब से एक गमछा निकालकर ,उसको साफ़ धोकर अस्थि उसमें बांधकर फिर से जेब में रख ली।

अपने मुक्तिदाता की पवित्र अस्थि साथ लेकर यह लोग पानगांव वापस आ गए। गांव वालों ने पूछा कि 'आप लोगों को बाबासाहब के दर्शन हुए थे क्या ? इस पर लिंबाजी ने गमछे में बांधकर लायी अस्थि सबको दिखायी। सभी ने अस्थि का दर्शन किया। लिंबाजी ने अस्थि को अपनी झौपड़ी में रख दिया। १२ दिसंबर १९५६ को फिर से ये सभी लोग एकत्र हुए। इस अस्थि को बांधकर नहीं रखने की बजाय किसी सही स्थान पर जतन से रखने का निर्णय किया। मिटटी का मटका ,नया सफ़ेद कपड़ा लाया गया। उन अस्थियों को मिट्टी के मटके में सफ़ेद कपडे में लपेटकर, एक पतले कपडे की थैली में रखकर तीन फुट चौड़ा एक गड्ढा खोदकर, चारों तरफ से पत्थर की दीवार जैसा बनाकर सार्वजनिक स्थान पर रखा गया। वह आजतक उसी अवस्था में है।

मूकनायक

काय करूं आतां धरुनियां भीड । निःशंक हें तोंड वाजविलें ॥
नव्हे जगीं कोणी मुकीयांचा जाण । सार्थक लाजून नव्हे हित ॥

वर्ष १ लें. ] मुंबई, शनिवार ता. १४ फेब्रुवारी १९२०. [ अंक २ रा.

मूकनायक.

स्वराज्याची सर सुराज्याला नाहीं !

**महेंद्र गायकवाड़**

देश में अस्पृश्य समाज की दशा बदलने तथा उनके काम को दिशा देने के लिए, उनके अस्तित्व और अस्मिता को जगाने के लिए भारत रत्न डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने 'मूकनायक' नामक पाक्षिक का पहला अंक ३१ जनवरी १९२० को प्रकाशित किया। इसका पंजीयन क्रमांक -बी -१४३० था। यह पाक्षिक १४ हरारवाला बिल्डिंग, पोयबावडी, परेल, मुंबई स्थित कार्यालय से प्रकाशित होता था। 'मूकनायक' पाक्षिक की एक अलग ही विशेषता थी। इस विशिष्ट 'मूकनायक' के शीर्षक के नीचे संत तुकाराम का अभंग का एक हिस्सा सुविचार के रूप में लिखा होता था।

*काय करु आता धरुनिया भीड, निः शंक हे तोंड वाजविले।।*
*नव्हे जगी कोणी मुकियाचा जाण, सार्थक लाजून नव्हे हित।।*

संत तुकाराम विद्रोही परंपरा या यूं कह लें समाज की कुरीतियों के खिलाफ लोगों में जागृति फैलाने वाले महाराष्ट्र की भूमि में जन्में व्यक्ति थे। बीसवीं सदी में उनके अभंग कितने प्रेरणादायी रहे होंगे इस बात का अंदाजा हम आज भी लगा सकते हैं।

## अर्थ पूर्ण

मूकनायक 'के मुखपृष्ठ पर दाहिनी तरफ वार्षिक दर २ रुपये तथा बांयी तरफ विज्ञापन की दर प्रति लाइन, पहली बार ५ आणा, दूसरी बार ४ आणा और हमेशा या नियमित रूप से २ आणा छापी गयी थी। 'मूकनायक' पाक्षिक कुल १९ अंक तक प्रकाशित हुआ। इसके प्रत्येक अंक की अपनी एक विशेषता है। लोगों का सही अर्थों में प्रतिनिधित्व करने वाला 'मूकनायक' अपने नाम को

# 'मूकनायक' की शताब्दी

**मूकनायक 'डॉ. बाबासाहब आंबेडकर द्वारा निकाला गया पहला पाक्षिक समाचार पत्र है। सौ साल पहले कोई समाचार पत्र / मासिक / नियतकालिक अथवा पाक्षिक प्रकाशित करना भी बहुत बड़ी बात थी। ऐसे दौर में भी डॉ. बाबासाहब आंबेडकर द्वारा 'मूकनायक' पाक्षिक निकाला। एक समाचार पत्र उस समय अस्पृश्य समाज की जरूरत थी और इसी अपरिहार्यता की वजह से 'मूकनायक' का प्रकाशन डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने शुरु किया। उन्हें अस्पृश्य लोगों की व्यथा, वेदना को सबको बताना था।**

सार्थक करता था। यह समाचार पत्र कुछ आरसे ही छपा लेकिन इसने उस समय अस्पृश्य समाज को हमेशा के लिए जगा दिया। वह एक तारे की तरह प्रकाश यात्री सिद्ध हुआ। समाज को शिक्षित करने की भावना लिए वह आम आदमी की आवाज को बुलंद करता रहा। 'मूकनायक' का जन्म जाति व्यवस्था के दौर का अंत करने वाली एक चिंगारी जैसा रहा, यदि ऐसा कहा जाय तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है।

## अग्रलेखों से सीख

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर, सिडनहैम कॉलेज में अर्थशास्त्र के प्राध्यापक थे जिसकी वजह से वे 'मूकनायक' के संपादक नहीं बने, परन्तु उन्होंने संपादक की जवाबदारी पांडुरंग नन्दराम भटकर को सौंपी थी। बाद में जब डॉ. बाबासाहब आंबेडकर उच्च शिक्षा पूरी करने के लिए विदेश गए तब ज्ञानदेव घोलप ने 'मूकनायक' की जवाबदारी ली। परंतु 'मूकनायक' में कुछ आर्थिक गड़बड़ियों की वजह से बाबासाहब ने उन्हें कार्य मुक्त कर दिया। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का समाचार पत्रों का कार्यकाल १९२० से शुरु हुआ। लेकिन उससे पहले ही २७ जनवरी १९१९ में उन्होंने साउथ ब्यूरो समिति के समक्ष अस्पृश्य समाज की हकीकत को लिखित रूप में बताया था। मूकनायक में १५ लेख / अग्रलेख प्रकाशित हुए जिनमे से ११ बाबासाहब ने लिखे हैं। इन लेखों में उस समय की स्थितियों और भविष्य की जानकारी का वर्णन है। १९ वीं सदी के ये अग्रलेख २० वीं सदी में भी अक्षरशः लागू होते थे। आज की राजनीतिक परिस्थितियों का लेखा जोखा भी उन लेखों में नजर आता है या उनकी याद दिला देता है। सामाजिक / धार्मिक लेखों की मार्मिकता प्रकट की जा सकती है। अस्पृश्य / बहिष्कृत वर्ग को 'मूकनायक ' ने वैचारिक रसद पंहुचाने का कार्य किया। मूकनायक के अलौकिक व महत्वपूर्ण योगदान की वजह से लोकयुद्ध को सफलता के साथ लड़ा गया। इसका उदहारण

महाड का चवदार तालाब सत्याग्रह और नाशिक का काळाराम मंदिर सत्याग्रह /पार्वती सत्याग्रह आदि हैं।

## धर्म व समाज व्यवस्था

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने मूकनायक के साथ सही मायने में सामाजिक जीवन में प्रवेश किया। तात्कालीन समाज व्यवस्था / सनातनी धर्म ने अस्पृश्य वर्ग को अज्ञान और अंध श्रद्धा की खाई में धकेल दिया था। उनकी अस्मिता और अस्तित्व को भुला दिया तथा आर्थिक और शैक्षणिक रूप से पीछे धकेल दिया था। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर संकट ला दिया था। अश्पृश्य समाज की ऐसी अवहेलना करने वाले हिन्दू समाज के बारे में बाबासाहब ने लिखा, 'हिन्दू समाज एक मनोरा है और जाति उसका एक मजला है। दूसरे मजले पर जाने के लिए कोई मार्ग नहीं है। जिस मजले पर जिसने जन्म लिया उसी मजले पर उसे मरना है। नीचे मजले का व्यक्ति चाहे वह कितना भी लायक क्यों नहीं हो उसे ऊपर वाले मजले पर प्रवेश मिलेगा ही नहीं। ऊपर के मजले का व्यक्ति चाहे वह कितना ही नालायक क्यों ना हो, उसे निचले मजले पर लौटने का कोई प्रावधान नहीं। ( मूकनायक 31 जनवरी १९२०)।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने समग्र हिन्दू धर्मशास्त्रों की काफी विवेचना की थी। समाज शास्त्रीय दृष्टिकोण से सापेक्ष विचार बताते हुए डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ' ब्रोकन मैन ' का सिद्धांत लिखते हैं। सामाजिक /वैचारिक ज्ञान से ओतप्रोत अग्रलेख केवल सम्यक क्रांति की दिशा ही नहीं अपितु व्यक्ति की प्रतिष्ठा और सम्मान को बहाल करने का धाडस मूकनायक के माध्यम से किया गया। सम्यक क्रांति के द्योतक लेखों में समाज की आवाज वाली भाषा तथा अन्याय और अत्याचार के खिलाफ विचार प्रकट करने वाली भाषा थी। उनके लेखों में शिक्षा का विचार अंतर्भूत था। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर का कहना था लडके /लड़कियों को प्राथमिक शिक्षा निशुल्क और अनिवार्य होनी चाहिए और शीघ्र से शीघ्र इसे लागू किया जाना चाहिए। (मूकनायक ५ जून १९२०)।

## विषमतावादी नीतियों पर प्रहार

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के मूकनायक समाचार पत्र में प्रकाशित किये गए विचार अत्यंत मार्मिक और दिल को छू लेने वाले हैं। उन्होंने अपने लेखों में उस समय के समाज के ज्वलंत मुद्दों पर अपने विचार प्रकट किये हैं। वे मुद्दे लोगों जीवन जीने से जुड़े होते थे। लोगों के जीवन जीने से जुड़े ऐसे मुद्दे आज भी देखने को मिलते हैं। उदाहरण के तौर पर स्वराज्याची सर सुराज्याला नाही (मूकनायक १४ फरवरी १९२०), हे स्वराज्य नव्हे, हे तर आमच्यावर राज्य (मूकनायक २८ फरवरी १९२०), स्वराज्यातील आमचे आहोरण त्याचप्रमाणे त्याची पद्धत (मूकनायक २७ मार्च

१९२०), अखिल भारतीय बहिष्कृत समाज परिषद (मूकनायक ५ जून १९२०) ,काक गर्जना ! (मूकनायक ३१ जुलाई १९२०), सिंह गर्जना (मूकनायक १४ अगस्त १९२०), दास्यावलोकन (मूकनायक २८ अगस्त १९२०), हिंदी राष्ट्राची प्राण प्रतिष्ठा (मूकनायक २३ अगस्त १९२० ) आदि दिशा दिखाने वाले अग्रलेखों से सामाजिक /धार्मिक / राजकीय / शैक्षणिक आदि वैचारिक पार्श्वभूमि का आधार बनाकर डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने सनातनी धर्म व्यवस्था को झटका दिया था। जाती और धर्म की विषमतावादी नीतियों पर प्रहार किया था। द्वेष से भरी हुई जुल्मी मानसिकता व उसके कुत्सित मन पर डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने अपनी विशद भूमिका जाहिर की थी। मूकनायक के पहले अंक (३१ जनवरी १९२०) में डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने लिखा कि 'हमारा यह बहिष्कार लोगों पर होने वाले अन्याय का उपाय बताने और उसकी भावी उन्नति तथा उसका मार्ग पर चर्चा करने के लिए समाचार पत्र जैसा और कोई मंच नहीं है। लेकिन मुंबई जैसे इलाके से निकलने वाले बहुत से समाचार पत्रों को देखकर तो यही लगता है कि उनके बहुत से पन्ने किसी जाति विशेष के हितों को देखने वाले ही नजर आते हैं। उन्हें अन्य जाति के हितों की परवाह ही नहीं है। यही नहीं कभी -कभी वे दूसरी जातियों के अहितकारक भी नजर आते हैं। ऐसे समाचार पत्रों वालों को हमारा यही इशारा है कि कोई भी जाति यदि अवनत होती है तो उसका असर दूसरी जातियों पर होता ही होता है। समाज एक नांव की तरह है। जिस तरह से इंजन वाली नांव से यात्रा करने वाले यदि जान बूझकर दूसरों का नुकसान करें तो अपने इस विनाशक स्वभाव की वजह से जल समाधि लेनी ही पड़ती है। इसी तरह से एक जाती का नुकसान करने से अप्रत्यक्ष नुकसान उस जाति का भी होता है जो दूसरे का नुकसान करती है ,इस बात में कोई शंका नहीं है। इसलिए स्व हित साधने वाले पत्र दूसरों का नुकसान कर अपना हित करना है जैसे मूर्खों के लक्षण सिखाये नहीं।

## आम आदमी की भूमिका

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की भूमिका आम आदमी की थी। कुछ समाचार पत्र मूकनायक में लिखी जाने वाली जो भूमिका उनके मनपसंद होती थी उसे उठाते थे। उन्हें न्याय मिले ऐसा प्रयास करते थे। कुछ समाचार पत्र डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की भूमिका के विरोध में लिखते थे। तो कुछ ऐसे ही महज टीका करते थे। उदाहरण के तौर पर बी.बी. भोपटकर ने 'भाला' में प्रचंड टीका की लेकिन डॉ. बाबासाहब आंबेडकर ने अपनी ख़ास शैली में उस टीका का उत्तर भी दिया। ऐसे ही लोकमान्य तिलक का 'केसरी' भी टीका करता था। 'हमें अच्छी तरह से याद है कि जब १९२० में हमने मूकनायक की शुरुवात की थी तब केसरी को हमारा विज्ञापन निशुल्क छापने की विनती की थी, लेकिन वह नहीं मानी गयी। बाद में जब शुल्क देने की बात कही गयी तो यह कह दिया गया कि जगह खाली नहीं बची। यही नहीं बाद में कोई जवाब भी नहीं दिया और मुलाक़ात का समय भी नहीं। (बहिष्कृत भारत, २० मई १९२७)।

## बहुरंगी भाषा प्रयोग

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की समाचार पत्र की भाषा और पुस्तक लिखने की भाषा शैली अलग अलग है। समाचार पत्र की मराठी भाषा अपरोधिक /दृढतापूर्वक / निश्चितता / संकल्पना /लक्ष्यवादी / भेदक / सूचक व प्रहार करने वाली भाषा अलंकृत थी। उसमें वाक्य प्रचार /कहावत /दृष्टांत /सुविचार ऐसी बहुरंगी मराठी भाषा का प्रचार करने वाले डॉ.बाबासाहब आंबेडकर की पाक्षिक समाचार पत्र की मराठी भाषा भी समृद्ध थी ,इसमें कोई शंका नहीं है। यही नहीं अंग्रेजी भाषा पर बाबासाहब को विशेष प्रेम था। इसके लिए उन्होंने बहुत से भाषण /संवाद और पुस्तकें अंग्रेजी में ही लिखीं। किताबें लिखते समय डॉ. बाबासाहब बहुत बारीक निरीक्षण कर जटिल सत्य को ढूंढते थे। सन्दर्भ ढूंढ कर विचार की गहराई तक जाते थे और इसका मूल्यांकन करते थे। ये बातें उनके पुस्तक लेखन में स्पष्ट नजर आती हैं। डॉ.बाबासाहब आंबेडकर की भाषा सहज, आसान, सादी और आम आदमी के बोलचाल वाली थी। दंभ को तोड़ने वाली उनकी भाषा दिशा दिखाने वाली थी इस वजह से आम आदमी में परिवर्तन कर सकी। पौराणिक प्रमाण / कथाओं का प्रयोग करते समय वे उनकी असलियत या सही /गलत को जाने बगैर वे कुछ बताते नहीं थे। मराठी / अंग्रेजी भाषा की वैभवशाली संम्पन्नता की साक्ष्य डॉ.बाबासाहब आंबेडकर ने अपने लेखन में उजागर की है। डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के मूकनायक पाक्षिक में पत्र व्यवहार /करूँ कहानी /वेडी कोकरे / बहिष्कृतों के नाम पर चरने वाले गुंडे इत्यादि विविध /विचार /वार्ता आदि का बहुत सा लेखन हकीकत और वर्तमान घटनाक्रम पर वक्तव्य करने वाला था।

## राजर्षि की अर्थ सहायता

३१ जनवरी १९२० को मूकनायक प्रकाशित करने के लिए राजर्षि शाहू महाराज ने २५०० रुपये की आर्थिक मदद की थी। उसके बाद कुछ दिनों में जब मूकनायक आर्थिक संकट में आया तब भी छत्रपति शाहू महाराज संस्थान के दिवान आर वी सबनीस ने समाचार पत्र को मदद करने के लिए २४ जनवरी १९२१ को पत्र लिखा था। पत्र में लिखा 'मूकनायक के संपादक श्री. घोलप को ७०० रुआपये का चेक भेजा जाय और यह रकम चंदे के रूप में मानी जाय।

(छत्रपति शाहू महाराज व डॉ. बाबासाहब आंबेडकर समग्र पत्र व्यवहार, संपादक - संभाजी बिरांजे, पृष्ठ क्रमांक १२० –१२१) उसके बाद २१ फरवरी १९२१ को मूकनायक के संपादक डी. डी. घोलप को कोल्हापुर के शाहू महाराज की तरफ से १००० रुआपये का चेक मिला था। लेकिन उसके बाद भी मूकनायक की आर्थिक स्थिति सुधरते नहीं दिख रही थी और राह आसान नजर नहीं आ रही थी। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के मित्र नवल भथेना ने भी मूकनायक के लिए सहकार्य किया था। उस समय डॉ.बाबासाहब आंबेडकर और दलितेत्तर सहयोगी नवल भथेना के बीच पत्र व्यवहार भी हुआ था। इस पत्र व्यवहार में उद्योगपति गोदरेज का उल्लेख भी मिलता है। मूकनायक अपने शुरुवाती अंकों में गोदरेज कंपनी की सेफ (तिजोरी) के विज्ञापन छापता था। गोदरेज जैसी नामी कंपनी का विज्ञापन मूकनायक जैसे दलित समाज के समाचार पत्र में प्रकाशित कराने में भथेना का बड़ा योगदान था। (परिवर्तनाचा वाटसरु डॉ. आंबेडकर सहकारी नवल भथेना : प्रबोधन पोल, पृष्ठ क्रमांक ३४ अंक १६ से ३० अप्रैल १९१८। नवल भथेना ने मूकनायक के आठ अंकों के विज्ञापन उपलब्ध कराया।

डॉ.बाबासाहब आंबेडकर के मूकनायक की वजह से अस्पृश्य और बहिष्कृतों के जीवन में नयी झलक आयी। यह मूकनायक पाक्षिक का शताब्दी वर्ष है। पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता है। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर स्वयं सिद्ध /सजग अनुभवों से / अपनी जानकारी के आधार पर विकसित की गयी उनकी पत्रकारिता आक्रामक थी लेकिन सम्यक अभिसरण की दिशा में जाने वाली थी। ■■

**गुरु नानक का उल्लेख सिख बंधु बहुत आदर से करते हैं और उन्हें सम्मान से श्री गुरु नानक देव जी के नाम से पुकारते हैं। गुरु नानक जी को समझने का प्रयास विद्वान और इतिहासकार नियमित रूप से करते आ रहे हैं गुरु नानक का मार्ग सीधे परमेश्वर से मिलन का मार्ग है गुरु नानक की ५५० वीं जयंती पर यह विशेष लेख...**

# सतनाम

**परमजोत सिंह चहल**

परमेश्वर का अस्तित्व हम सभी के लिए बहुत आवश्यक है। ईश्वर अनेक हो सकते हैं और उन तक पंहुचने के मार्ग भी अनेक हो सकते हैं। यदि परमेश्वर एक है तो उसे प्राप्त करने के मार्ग अलग अलग हो सकते हैं। परमेश्वर को जानने के मार्ग अलग अलग है। महापुरुषों ने भिन्न भिन्न मार्ग संसार को बताये हैं। साधना के मार्ग से आत्मा को प्राप्त करें तथा उपासना के मार्ग से परमेश्वर को प्राप्त करें आत्मा को नहीं। आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध की खोज के अनेक मार्ग संसार में प्रचलित है। गुरु नानक जी ने मनुष्य के भीतर ही परमेश्वर की खोज की। और परमेश्वर इसी सृष्टि में है।

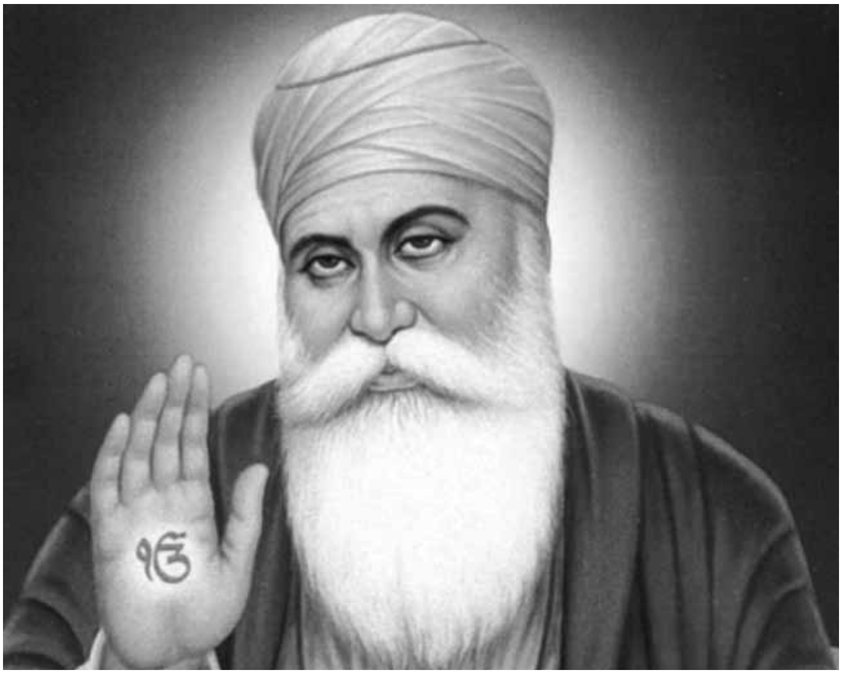

## 'सत्य ' व 'सत'

सतनाम ये परमेश्वर का नाम है। संसार 'सत्य' है और सत भी है। शब्दकोष में सत और सत्य का मूल अर्थ एक ही है। दोनों में कोई फर्क नहीं है। परन्तु सत्य और सत शब्द का विश्लेषण किया जाये तो सूक्ष्म अंतर है। पानी या जल दोनों ही शब्दों का एक ही अर्थ है। दोनों में अंतर नहीं है। वैज्ञानिक इसका विश्लेषण करते है तो अंतर का पता चलता है। वैज्ञानिक गहराई में जाते है। अनेक प्रयोग करते है तब वे कहते है की पानी एक नहीं दो घटक है। हाईड्रोजन और ओक्सिजन नाम की दो वायु का मिश्रण है। हाईड्रोजन नाम की वायु और ओक्सिजन नाम की वायु को मिलाने पर पानी बनता है। इसी प्रकार से सत्य और सत का विश्लेषण किया जा सकता है। सत्य और सत एक है। दोनों का मूल एक है। परन्तु गहराई में जाओगे तो अंतर का पता चलता है।

सत का अर्थ है 'जो अस्तित्व में है और उसकी हम अनुभूति कर सकते है। उसकी अनुभूति होती है। सत का अनुभव किया जा सकता है। दूसरी तरफ सत्य का स्पर्श नहीं किया जा सकता। उसका अनुभव नहीं होता। सत्य की अनुभूति नहीं होती है। एक उदाहरण से इसको समझा जा सकता है।

आईने के सामने खड़े हो जाओ। आपका प्रतिबिम्ब प्रतिमा उस दर्पण में दिखाई देता है। प्रतिबिम्ब और आप अलग अलग हैं। प्रतिबिम्ब सत्य है उसकी अनुभूति नहीं होती। आप सत है। आपका अनुभव किया जा सकता।

गणित के आंकड़े सत्य हैं लेकिन उनकी अनुभूति नहीं होती उसे हम स्पर्श नहीं कर सकते। लेकिन आप सत हैं आपका अनुभव किया जा सकता।

सोते समय हम सपना देखते है। वे सत्य हैं लेकिन उनकी अनुभूति नहीं होती है, जागने पर सपना मिट जाता है। सपना सत्य है उसकी अनुभूति नहीं होती। आप सत है। आपका अनुभव किया जा सकता।

चित्रकार चित्र बनाता। चित्र अलग है। चित्रकार अलग है। चित्र बनाकर चित्रकार अलग होता है तब भी चित्र रह जाता है मिटता नहीं। चित्र का अनुभव होता है और चित्रकार का भी अनुभव होता है।

मूर्तिकार मूर्ति बनाता। मूर्ति अलग है मूर्तिकार अलग है। मूर्ति बनाकर मूर्तिकार अलग होता है तब भी मूर्ति रह जाति है मिटती नहीं मूर्ति का अनुभव होता है और मूर्तिकार का भी अनुभव होता है।

लेकिन नर्तक के साथ ऐसा नहीं होता। नृत्य के थमने के साथ नृत्य मिट जाता है। नर्तक जब तक नृत्य कर रहा है तब तक दोनों दिखाई देते है। नृत्य करना बंद करते ही नर्तक रह जाता और नृत्य नहीं दिखता। नृत्य और नर्तक दोनों एक ही है। नृत्य और नर्तक अलग अलग नहीं है दोनों एक ही है। चित्रकार और चित्र अलग अलग है। मूर्तिकार और मूर्ति अलग अलग है। गणित के आंकड़े और मनुष्य अलग है।

परमेश्वर नर्तक और सृष्टि नृत्य है। दोनों एक ही है। रचना और रचयिता दोनों एक ही है। निर्माण और निर्माता दोनों एक ही है। गुरु नानक जी कहते है। जब दोनों एक हैं तब परमात्मा की खोज में संसार को त्यागने कीआवश्यकता नहीं। परमात्मा की खोज

में राज पाठ को त्यागने की आवश्यकता नहीं परमात्मा की खोज में पत्नी, बच्चे को त्यागने की आवश्यकता नहीं संन्यासी बनने का आवश्यकता नहीं ब्रह्मचारी व्रत की आवश्यकता नहीं नियम, उपवास, रोजा की आवश्यकता नहीं। नदी में एक पैर पर खड़े रहकर तपस्या की आवश्यकता नहीं। जंगल में जाकर निवास करने की आवश्यकता नहीं। अन्न त्याग कर शरीर को कष्ट देने की आवश्यकता नहीं।

## परमात्मा और मानव

गुरु जी ने परमात्मा और मनुष्य के बीच सम्बन्ध को जोड़ने पर बल दिया। गुरु जी ने परमात्मा और मनुष्य के बीच सम्बन्ध को सरल और आसान कर दिया। परमात्मा और मनुष्य एक ही हैं। परमात्मा और मनुष्य दोनों अलग अलग नहीं है। संसार में रहकर मनुष्य उस एक से जुड़ सकता है। जिसका अस्तित्व है वह सत है। सृष्टि सत है। सत का अनुभव किया जा सकता। सत्य दिखता है अनुभव नहीं किया जा सकता।

गुरु नानक जी ने विश्व भ्रमण किया और नदी के ठन्डे पानी में तीन रात बीता कर उस 'एक' को पा लिया। जब नदी के पानी से बाहर निकले तब इस संसार को उस एक की नजर से देखने लगे। तब परमेश्वर की आज्ञा से गुरु जी ने मन्त्र का उच्चारण किया तो उसका प्रारंभ गणित के "एक" से किया और पहला शब्द "सतनाम" कह दिया।

एक ओर लोग साधना के मार्ग पर चल रहे हैं। जंगल में जा कर साधना कर रहे हैं। परिवार का त्याग कर रहे हैं। राज पाठ का त्याग कर रहे हैं। संसार से दूर और सांसारिक प्रपंच से दूर जा कर साधना के द्वारा आत्मा की खोज कर रहे हैं। शरीर को कष्ट दे रहे हैं। बिना खान पान के भूखे रह कर साधना कर रहे हैं। संसार एक मोह है उससे मुक्ति के मार्ग की खोज कर रहे हैं। तो दूसरी तरफ लोग एक पैर पर नदी के पानी में खड़े हो कर तपस्या कर रहे हैं। शरीर पर विभूति लगाकर माला का जाप कर रहे हैं। वस्त्र त्याग कर परमेश्वर की खोज कर रहे है। पूजा अर्चना में लगे हैं। साधना और उपासना आत्मा और परमेश्वर के प्राप्ति के मार्ग बन गए हैं।

## समाधान व शांति

गोरखनाथ जी का भंडारा हो या गुरु नानक जी का लंगर दोनों अहंकार से मुक्ति का मार्ग बताते है। लंगर में आपको हाथ ऊपर करके मांगना है। इसका कारण यह है कि वह प्रसाद है। घर में पकवान पकाया भोजन हो गया। पकवान को पूजा में रखा प्रसाद हो गया। पकवान तो एक ही है। बुद्ध के शिष्य कटोरा ले कर भिक्षा मांगने चले तो गए। द्वार पर खड़े हो गए। मांगना नहीं था बुद्ध की आज्ञा है की मांगना नहीं भिखारी कहलाओगे। जो मिलेगा उस पर ही निर्भर रहना है। जो मिलेगा उस पर ही उदर निर्वाह करना है। बुद्ध की बात तो कभी का भूल गए थे। जब कोई भिक्षा नहीं देता तो शिष्य उसे घूर के देखते। और कभी कभी शाप भी दे देते हैं। मंदिर में भी सेवक प्रसाद देते विभूति मस्तक पर लगाते बदले में किसी ने दान नहीं दिया तो उसे बुरा भला कहने में संकोच नहीं करते हैं। गुरु जी के लंगर में बड़े बड़े दानी दान करते और आशा करते है की उनका नाम चमकते अक्षरों में लिखा जाये। उनके नाम की प्रार्थना की जाए। उनकी तस्वीर किताबों में प्रकाशित की जाय। गुरु जी के वाणी का असर शिथिल होता जा रहा है। भंडारा हो या लंगर अहंकार को मिटाना है। समाधान और शांति होनी चाहिए। जब तुम्हारा अहंकार जायेगा तुम उसके नजदीक अपने आप को खड़ा पाओगे। गुरु जी कहते हैं सेवा करो, दास बनो, गुलाम बन जाओ, सेवक बनो, गुरु के चरणों पर गिर जाओ, आज्ञा मानो, कोई संदेह मत करो, सब कुछ उसकी आज्ञा पर निर्भर है, तुम कुछ भी नहीं, तुम मिट जाओ तुम गा गा कर कर मिट सकते हो। तुम्हारे और परमेश्वर के मध्य तुम्हारा अहंकार है। गुरु के सहारे अहंकार को घटाया जा सकता है। अहंकार के कारण तुम समझते हो कि तुम ही सब कुछ हो परमेश्वर कुछ भी नहीं। अहंकार के समाप्त होते ही तुम्हें समझ आ जाता है कि परमेश्वर ही सब कुछ तुम कुछ भी नहीं।

गुरु जी अहंकार को नष्ट करने की बात बार बार वाणी में कहते है। अहंकार के नष्ट होते ही तुम उसे पा लोगे। बुद्ध का मार्ग और गुरूजी का मार्ग दोनों अहंकार को नष्ट करने की बात करते हैं। गुरूजी साधारण मार्ग से अहंकार को नष्ट करना बता रहे है।

**(पूर्व न्यायाधीश , सदस्य गुरुद्वारा बोर्ड, नांदेड )**

**अनुवादः जयश्री देसाई**

## गुरुनानक की सीख

गुरु नानक ने ईश्वर की पूजा करने को व उन्हें प्रत्येक कर्म में याद रखने को महत्व दिया था। उन्होनें अपने मन का अनुसरण करने से बेहतर प्रबद्ध व्यक्ति का अनुसरण करने का सुझाव दिया। इनकी शिक्षाएं गुरु ग्रंथ साहिब (जिसमे ९४७ काव्य स्त्रोत व प्रार्थनाएं हैं) में संग्रहीत हैं और गहन विचारों के छन्द गुरुमुखी में दर्ज.हैं जिसका ज्ञान आज तक भी अनश्वर है। पुजारियों व काजियों द्वारा गुमराह करने से व परस्पर विरोधी संदेश देने से लोगों की दुर्दशा देखने पर गुरु नानक ने लोगों को आध्यत्मिक सच का मार्गदर्शन करने के लिए पर्यटन शुरू किया। उन्होनें चारों दिशाओं में भाई मर्दाना (उनके सहयोगी) के साथ हजारों किलोमीटर की पद यात्रा की और सभी धर्मों, जाति व संस्कृति के लोगों से मिले। उनकी यात्राओं को उदासीस कहा गया। जन्मसखी (जीवन के बारे मे जानकारी व खाते) और वर्स (छन्द) नानक के जीवन के प्रथम जीवन स्त्रोत है जिसे आज तक मान्यता प्राप्त है। गुरदास (गुरु ग्रंथ साहिब की नक्काशी)। नानक के जीवन के बारे में पहले के जीवन स्त्रोत हैं जन्मसखी और वर्स अर्थात जीवन काल और छन्द। गुरु नानक के जीवन के विधर्म लेख की सही जानकारी देने के लिए भाई मनि सिंह द्वारा ज्ञान रत्नावली लिखी गई थी। गुरुनानक ने बताया है कि निस्वार्थ सेवा के द्वारा ईश्वर तक पहुंचा जा सकता है तथा ईश्वर की कृपा के बिना कुछ भी संभव नहीं है। इसलिए आदर्श रूप से ईश्वर ही मुख्य कर्ता हैं। इसलिए हमें हमेशा पाखंड व झूठ से बचना चाहिए क्यूंकि ये व्यर्थ के कार्यों को दिखाता है। सिख धर्म के अनुसार नानक की शिक्षाएं तीन प्रकार से संपादित हैं –वंद चक्को (जरूरतमन्द की मदद करना व साझा करना), कीरत करो (बिना धोखे के शुद्ध जीवन जीना), नाम जपना (खुशहाल जीवन व्यतीत करने के लिए ईश्वर को याद करना)।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर की जन्मस्थली महू में बनाया गया भव्य स्मारक

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के दिल्ली स्थित आवास २६ अलीपुर मार्ग में  इतिहासिक स्मारक का निर्माण किया गया है

# देश का सबसे ज्यादा बिकने वाला मासिक

सत्यमेव जयते
महाराष्ट्र शासन

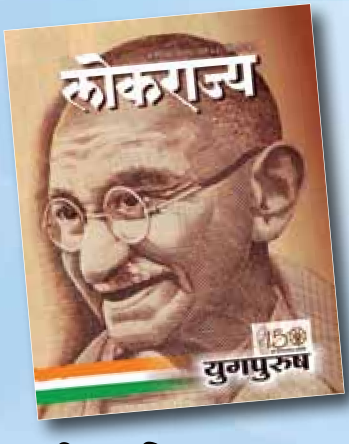


# लोकराज्य

अधिकृत और अचूक जानकारी

## ABC ने लगायी अधिकृत मुहर

## लोकराज्य (मराठी)

## ६,२९,७९२

अन्नदाता (तेलुगू)
३,४३,३६६

वनिता (मलयालम)
३,४०,६८०

गृहलक्ष्मी (हिंदी)
३,०४,२०३

मलयालम मनोरमा (मलयालम)
२,४१,१९३

**सूचना व जनसंपर्क महासंचालनालय, महाराष्ट्र सरकार**

Visit: www.mahanews.gov.in | Follow Us: /MahaDGIPR | Like Us: /MahaDGIPR | Subscribe Us: /MaharashtraDGIPR

---

प्रति / TO

**O.I.G.S. भारत सरकार के**
**सेवार्थ LOKRAJYA**

***If undelivered, please return to:***

प्रेषक / **From**
अनिल आलूरकर
उपनिदेशक (प्रकाशन), सूचना व जनसंपर्क महानिदेशालय
लोकराज्य शाखा, ठाकरसी हाऊस, २री मंजिल, मुंबई पोर्ट ट्रस्ट, पोर्ट हाऊस के पास, शुरजी वल्लभभाई मार्ग, बेलार्ड इस्टेट, मुंबई-४०० ००१

---

लोकराज्य मासिक पत्रिका सूचना एंव जनसंपर्क महानिदेशालय, महाराष्ट्र सरकार, मंत्रालय, मुंबई की ओर से मुद्रक व प्रकाशक अनिल आलूरकर, उपनिदेशक (प्रकाशन), ने मे. मुद्रण प्रिंट एन पैक प्राइवेट लिमिटेड, प्लाट नं सी-२६०, एमआईडीसी, टीटीसी इंडिस्ट्रियल एरिया, सविता केमिकल रोड, बिहाइंड गोकुल होटल, पवने, नवी मुंबई - ४००७०३ से छपवाकर सूचना व जनसंपर्क महानिदेशालय, महाराष्ट्र सरकार, मंत्रालय, मुंबई-४०००३२ से प्रकाशित किया ।

मुख्य संपादक : ब्रिजेश सिंह